PREFACE

Though small in size, this book Vyadhi grah contains some of the most potent and valuable experiments. Embodied in it there are several novel methods of treatment and experiments hitherto unseen in other books. A Jain Gorji named Vishram is the author of this book. While giving his introduction, the author writes: "There lived a Gorji-priest-named Jiwa in a place called Agamgachha at Arjunpur (Anjar) in Koorma Desh (Cutch). His disciple was Pitamber Gorji and his disciple Vishram Gorji has written this 'Vyadhi Nigrah' on the fifth day of the dark half of Bhadrapad, Samvat 1839, (A. D. 1783) the day being Thursday".

The language and the construction of verses in this volume were crude and faulty in many places. Hence some corrections have been introduced therein but grammatical mistakes have been kept uncorrected intentionally in various verses. Such tiny faults should not be looked to minutely in such useful works. They do not in any way minimise their importance. The book would have remained equally useful and valuable even if the author had written it in his own mother tongue. Real credit is however due to him that he wrote it in a verse form according to his knowledge of Sanskrit language. Hence, readers, if they be knowing Sanskrit well, should not look to [illegible] constructional mistakes in this

work, but they should sincerely thank its author for affording to the people at large excellent, simple, easy and ready-at-hand household remedies and experiments.

१ चेला मोतीचंदजी माहदजी चांपसी पठनार्थं श्री मांडवी विंदरे सं. १८७२ चैत्र शुदी ५ गुरौ लिपीकृतं

२ लि. ऋ. शिवजी मालजी शिष्यार्थं पठनहेतवे सं. १८७३ ना वर्षे माहा विद १४ शुक्रे

३ पूज्योत्तम पूज्यजी ऋपिश्री ५ मालजीजी तत्-शिष्य पूज्योत्तम पूज्यजी ऋपिश्री ५ शिवजीजी लिपिकृतं तत्शिष्य ऋख गोपालजी मोतीचंदजी राजकोट मध्ये लिपीकृत्य संवत १९४७ ना ज्येष्ट शुदी ३ वार भौमवारे वार उपर त्रन वागे लखी

४ संवत १९०६ रा वर्षे शाके १७७१ प्र० मृगशिर शुक्ल प्रतिपदायां १ तिथौ गुरुवासरे पूज्य प्र श्रीश्रीश्री १०८ श्री जिनापयो सूरीश्वरजित् रतलाम चतुर्मासके गुरां साहिवजीजी १०८ श्रीश्री कस्तूरचंदजी तेपां शिष्य पं. चंद्रभाणलिपि ॥ खरतर श्री भावहर्षसूरी गच्छे पलिका चतुर्मासिके

Four manuscript copies of this book were procured. Two of them were in Rasashala Granth Bhandar and the other two copies were given to me by Jain Gorji Mohanlalji Maharaj of Tankara, whom, I take here an opportunity to thank with a sincere heart.

Books of proved merits on Ayurved are often to be found in Jain Granth Bhandars, but public at large scarce obtain their a

tage. Their true knowledge is transmitted by Jain Gurus to their disciples and their benefits are reaped mainly by followers of Jainism. If such valuable works in Jain Granth Bhandars and in possession of Jain priests and Gorjis be published, a great new light will be thrown on the domain of Ayurveda. There will be an excellent addition to its literature and Vaidyas will come to know some of the most successful remedies to cure several diseases, generally regarded incurable. It is our humble request to Jain Sadhu Maharajs and to the Secretaries of Jain Granth Bhandars to communicate with us if they have with them such valuable manuscripts, volumes, notes, pamphlets etc. on Ayurveda. We shall arrange to get them copied and published, which will be a permanent boon to humanity.

The mother-tongue of the author was Kathiawari-Cutchhi. So in many places he has given a sanskritised form to several words. Such forms will not be found in any of the Ayurvedic Dictionaries or Nighantu. So to ward off the difficulties of the readers, a new commentary on this book has been prepared and published alongwith.

Gondal
26-10-39.

Rajvaidya Jivaram Kalidas Shastri

——:o:——

रसशाला औषधाश्रम गोंडल काठीआवाडकी पुस्तकें

रसोद्धार तंत्र—गुजराती १८ वी आवृत्ति पृष्ठ ४०० पोस्टेज सह रु. १॥।

रसप्रकाश सुधाकर—मूल श्लोकके साथ गुजराती टीका ३री आवृत्ति छप रही है पक्का कपडेका जिल्द रु. २

पार्वतीपुत्र श्री नित्यनाथसिद्ध विरचित रसरत्नाकरांतगतः

ऋद्धिखंड

हजारो किमियागर लोग जिस ग्रन्थ प्राप्त करनेके लिये हजारो रुपया खर्च करनेपर निराश होते थे वह ग्रन्थ छप गया है। हजारो रुपया खर्च करके वडे परिश्रम के पीछे यह ग्रन्थ प्राप्त किया है किमियागरोके लिये और धातुवाद लोह-सिद्धि देहसिद्धि के लिये परिश्रम करने वालोंके लिये यह ग्रन्थ वडा प्रकाश कर रहा है इसका मूल्य जितना रखे कम हैं क्योंकी हजारो रुपया खर्च करने पर भी यह ग्रन्थ प्राप्त होना असंभव था। मूल्य रुपया १५ पंधरा

श्री भगवद् गीता अंग्रेजी और संस्कृत—मूल्य रु. ५ पांच.

अंग्रेजी सिद्धिदात्रीं टिप्पणी और ३ अध्याय पर राजवैद्य जीवराम कालिदास शास्त्रिकृत चंद्रघंटा नामकी सस्कृत टीका और उसका अंग्रेजीं भाषांतर कें साथ छपी है।

आज कल जो गीता प्रचलित है उसमे २५० जगह पाठभेद और ४१ श्लोक कम है इस पुस्तकमें २५० पाठभेद देकर उनका प्रतिपादन किया गया हैं देश विदेश से बडे वडे विद्वानोने और प्रतिष्ठित वर्तमान पत्रोंने समालोचना कि है पंका कपडे को सुनहरी बाइडींग है।

श्री भगवद् गीता–रिव्युस एन्ड ओपीनीयन्स
पक्का सुनहरी नाम कपडे का बाइन्डींग यह उपर छपी हुई गीतापर देश विदेशके गण्य मान्य विद्वानो के अभिप्राय का पुस्तक है. पृष्ठ १२० मूल्य ०॥ आठ आना

श्री सूक्त ०।≈ आने

पक्का बाइन्डींग ११२ पृष्ठ लक्ष्मी ऐश्वर्य प्राप्त करने का यह वेदोक्त लक्ष्मीका स्तुति पाठ है मूल मंत्रके साथ श्री प्रसादनी नामक संस्कृत टीका और गुजराती भाषांतर के साथ छपी है इसमे अनेक प्रयोग भी दीये है।

संवत १९९६ (इस्वी १९४० के अक्टोबर तक) जिसमे दुनियाका भविष्य ७ कोलम मारकेका दिया है मूल्य ०–२–० पोस्टेज ०–१–३

(रसशाला की पुस्तक विक्रीसे मिलनेवाला द्रव्य धर्मार्थ मे हि व्यय होता है)



रसशाला औषधाश्रम गोंडल काठीआवाडनां केटलांक औषधो भस्म कूपीपक्व रसायन पर्पटी

१ अभ्रक भस्म १००० (सहस्र पुटी)

किंमत–तोला १ ना रु. २० वीश. आ भस्म वधी जातनी उधरस क्षय संग्रहणी केन्सर श्वास महाकुष्ठ वगेरे महा रोगोने मटाडे. योगवाही रसायन छे, घणी शक्ति आपे वाजीकर पौष्टिक छे. मात्रा–सवार सांज एक रती मध माखण के घी साकर साथे लेवी.

२ अभ्रक भस्म ५०० पुटी। किंमत–तोला १ना रु. १० दस. मात्रा १ थी २ रती सवार सांज मध घी

माखण साकर दुध के मलाइ साथे लेवी. छातीनो वळतरा दाह मगजना फेर चक्कर नवळाइ फेफसांनो श्वासनळीनो सोजो मटे, भुख लागे शक्ति आवे नवळाइ धातुस्राव वीर्यदोष मटे.

३ अभ्रक भस्म १०० पुटी । र. तं. । किंमत–तोला १ ना रु. १।।। पोणा बे. मात्रा–१ थी २ रती मध माखण के घी साथे बे वखत लेवी कफघ्न शक्तिप्रद पौष्टिक.

४ कांतलोह भस्म १०० पुटी । किंमत–तोला १ ना रु. ४ चार. वीर्य आयुष्य आरोग्य बळ वधारे, पांडु आमदोष वधेली चरबी लीवर आमवात हरस कमळो वगेरे रोगने मटाडे उत्तम पौष्टिक छे.

५ ताम्रभस्म १०० पुटी किंमत–तोला १ ना रु. २।। अढी. मात्रा–१ रती सवारे १ रती सांजे मध पीपर साथे के मलाइ साथे आपवी. उधरस छातीनो दुखावो सोजा पेटनां दरद मटे छे.

६ प्रवालभस्म चंद्रपुटी । र. तं. । किंमत–तोला १ ना ०।।। बार आना. मात्रा–२ थी ४ रती मध घी मलाइ के दुध साथे. कफ पित्तनुं शमन करे पडतु लोही सुकी उधरस छातीनो दुखावो दाह मटाडे विषविकार अने भूत प्रेतनी बाधा तथा मंगळ ग्रहनी नडतर मटाडे.

७ बंगभस्म गोरक्षनाथो पोळी । र. तं. । किंमत–तोला १ ना रु. ५ पांच. मात्रा–सवार सांज बबे रती मध माखण के मलाइ साथे. बळ वधे खोराक पचे, भुख लागे बुद्धि सौंदर्य आरोग्य धातु वीर्य वधे, मधुमेह वीर्यना अने ऋतुना रोग मटे.

८ मंडूर भस्म लाल । र. तं. । किंमत–तोला १ ना

०।। आठ आना. मात्रा–१ थी २ वर्ष सुधीना बाळकने टंके १ थी २ रती मोटा माणसने २ थी ४ रती, मध माखण के दुध साथे अपाय. शीतवीर्य छे, बाळकोनुं दुबळापणुं पेटनां दरद लीवर बरल वधी होय. लोहीनी फीकाश वगेरे बाळकोनां दरदमां फायदो करे छे. पेटनां दरद कमळो काळो कमळो हरस नबळाइ वगेरे दरद मटे छे.

९ मंडूरभस्म गोरक्षनाथी । र. तं. । किंमत–तोला १ ना रु. २ बे. मात्रा–गुण–मंडूरभस्म लाल प्रमाणे. मध के दुध साथे. विशेपमां पौष्टिक आयुष्य बळ शक्तिवर्धक छे.

१० मुक्तापिष्टी नं. १ (साचां मोतीनी पिष्टी) (आ पिष्टी उंची जातना मोतीना बने छे) किंमत–तोला १ ना रु. १०० सो. मात्रा–१ रती सवारे १ रती सांजे मध घी माखण साथे मलाइ के गायना दुध साथे अपाय छे. गरम खाटी चीजो ओछी खावी. आ मोतीनी पिष्टीनुं हमेशां सेवन करे तो ते माणसने गढपण आवे नहीं, आंख कान मगज विगेरे इंद्रियो छेवट सुधी बळवान रहे शरीर निरोगी रहे आयुष्य कांति प्रतिभा, बुद्धि, स्मरणशक्ति हृदयबळ पराक्रम वधे, शरीरमां लोही भराय दरेक जातनी नबळाइ मटे; क्षय उधरस दम मंदाग्नि पित्त दाह कफ गांडपण मगजनो दुखावो स्त्रीओना गर्भाशयनो रतवा आंखनी गरमी हरस पडतुं लोही वाइ जीर्णज्वर खोटी गरमी मटे, स्फुर्ति उत्साह वधे मन हमेशां आनंदमां रहे संतान उत्पन्न थाय.

११ मुक्तापिष्टी नं. २ (आ पिष्टी साधारण मोतीनी बने छे) किंमत–तोला १ ना रु. २० वीश. मात्रा–गुण मुक्तापिष्टी नं. १ प्रमाणे.

११ लोहभस्म १०० पुटी किंमत–तोला १ ना रु. १॥। पोणा बे. मात्रा–सवार सांज बबे रती. शक्ति बळ वीर्य कांति भुख वधे खोराक पचे मोळ उबको अजीर्ण अम्लपित्त बरल लीवर वधेली चरबी लोहीबगाड हरस पेटनां जंतु आमवा शूळ नबळाइ मटे शक्ति आवे.

१२ सिद्धहरताल भस्म ४४० पुटी किंमत–तोला १ ना रु. ५० पचास. मात्रा–०॥ थी १ रती घी के मध साथे चाटवी. २१ थी ४० दिवस सेववाथी १८ जातना कोड लोही बगाडनां दरदो भगंदर नासुर पत गळकोढ सफेदकोढ सन्निपात अपस्मार उपदंश फिरंगरोम हाथीपग ग्रंथी सोजो सुवावडीना वधा दरदो, पक्षघात ८० जातना वाना रोग उधरस श्वास क्षय वधी जातना हरस, संग्रहणी मधुमेह वधेली चरबी आंतरडांनुं वधवुं एपेन्डीसाइटीस कंठमाळ आमवात वगेरे रोगो मटे छे.

१३ सुवर्णभस्म रक्त किंमत–तोला १ ना रु. ५० पचास. मात्रा–सवार सांज अकेक रती मध माखण के मलाइ साथे. शीतवीर्य कामोत्तेजक पौष्टिक बळवर्धक छे. वृद्धावस्था आववा देती नथी वृद्धावस्थामां जुवानी लावे छे आंखने हितकारक मेधा स्मरणशक्ति बुद्धि आयुष्य आरोग्य वधारे छे क्षय मधुमेह गांडपण मनना भ्रम व्यग्रता उद्धताइ उतावळापणुं चंचळपणुं तामसी स्वभाव मटाडे छे कोइपण दरदनो नबळाइमां अपाय छे. क्षय रोगनुं खास औषध णाय छे.

१४ सिद्धमकरध्वजनी षोडशगुण चंद्रोदयनी अनुपान मिश्र गोळी किंमत–तोला १ ना रु. ५०. कामोत्तेजक पौष्टिक.

॥ श्री व्याधिनिग्रहः ॥

॥ श्री गणेशाय नमः । श्री जिनाय नमः । श्री गुरुभ्यो नमः ॥

गुरुपादं चेष्टदेवं नत्वा वक्ष्यामि ग्रंथतः
व्याधिनिग्रहनामायं ग्रंथोपि बालबोधकः ॥१॥
देशकालवयोवह्निनिदानं व्याधिनिश्चयं
पंच कर्माणि साध्योथ ज्ञात्वा चौषधं दापयेत् ॥२॥
लंघनं पाचकं शोध्यं शमनं पथ्यतापनं
सर्वरोगेषु कर्त्तव्यमनुमाने विशेषतः ॥३॥

॥ सर्वज्वरहरः क्वाथः ॥

कटंकारीद्वयं शुंठी धान्यकं सुरदारु च
एभिः पाचनमुद्दिष्टं सर्वज्वरनिकृंतनं ॥४॥
तुल्यैर्नागरभूनिंबगुडुचीमुस्तकैः स्मृतः
कषायः पाचनं चामे ज्वरिज्वरविनाशनं ॥५॥

॥ वात ज्वरे क्वाथः ॥

गुडुचीधान्यकारिष्ठकंटकारी सचंदनं
गुडुच्यादिरयं क्वाथः सर्वज्वरहरः स्मृतः ॥६॥

॥ वातज्वरे क्वाथः ॥

पिप्पली पिप्पलीमूलं निशाधन्वनमुस्तिका
विश्वाछिन्नोद्भवक्वाथो देयो वातज्वरे सदा ॥७॥

॥ पित्त ज्वरे क्वाथः ॥

द्राक्षापर्पटकं मुस्ता किरातं कटु वालुकं
क्वाथः पित्तज्वरे देयो मधयुक्तं तृपापहं ॥८॥

॥ कफ ज्वरे क्वाथः ॥

वासकं शुंठी सिंही च भार्गी शठी किरातकं
क्वाथः कफज्वरे देयो चरकेण च भाषितः ॥९॥

श्लो. ६ अरिष्टं-निम्बत्वचा । श्लो. ८ वालुकं-वालकः । कटु-तिक्ता
श्लो. ९ सिंही-कंटकारी ।

॥ वातपित्ते क्वाथः ॥

अमृता मुस्तकं वासा पर्पटं त्रिश्वभेषजं
क्वाथः पित्तं मरुद्धंति पंचभद्रो ज्वरे स्मृतः ॥१०॥

॥ वातकफ ज्वरे ॥

निदिग्धिकामृता शुंठी पुष्कराह्वै शृतं पिबेत्
क्वाथः कासारुचिश्वासकफवातज्वरापहः ॥११॥

॥ पित्तकफज्वरे क्वाथः ॥

वला पटोलीत्रिफला यष्टी पत्रं वृषस्य च
क्वाथो मधयुतः पीतो हंति पित्तकफज्चरे ॥१२॥

॥ त्रिदोषज्वरे क्वाथः ॥

भूनिंवा कटुका मुस्ता शुंठी पर्पटकोमृता
वासको धन्वयासश्च द्राक्षा भांर्गी सपुष्करा ॥१३॥
पाठा सपिप्पली शृंगी क्वाथमेषां प्रयोजयेत्
अष्टौ ज्वरान् महाघोरान् वातपित्तकफोद्भवान् ॥१४॥

॥ सन्निपात ज्वरे क्वाथः ॥

द्वे वृहत्यौ शठी शृंगी वत्सकः कटुरोहिणी
पटोलं पुष्करं भांर्गी वासकः सदुरालभः ॥१५॥
एप वृहत्यादिक्वाथो मलानां च निवारणः
चतुर्दश सन्निपातान् हंति पाने सशीततां ॥१६॥

॥ मलज्वरे क्वाथः ॥

श्यामाकः सिंधवं द्राक्षा कटुकं च हरीतकी
एप क्वाथो मलद्रावं कुरुते ज्वरिणां सदा ॥१७॥

॥ शीत ज्वरे ॥

भूनिंवः कटुकारिष्टा यत्रा चेंद्रस्य वामृता
वृहती वासकः काथः पाने शीतज्वरापहः ॥१८॥

श्लो. १५ वत्सक –कुटजत्वक्
श्लो. १७ श्यामाकः आरग्वधः गरमाळो

॥ एकांतरीये वेलाज्वरे क्वाथः ॥

निर्गुंडिकामृता क्षुद्रा भूनिंबो भृंगराजकं
क्वाथो वेलाज्वरं हंति दिनांतरगतज्वरं ॥१९॥

॥ विषम ज्वरे ॥

सजीरकं गुडं भक्षेत् सगुडां वा हरीतकीं
सगुडान् वा तिलान् भक्षेत् हंति वा विषमज्वरं॥ २०॥

॥ जीर्णज्वरे क्वाथः ॥

गुडार्द्रकं वा त्रिफला क्वाथो देयो गुडेन तु
द्राक्षामृता पद्मकं च हंति ज्वरं पुराणकं ॥२१॥

॥ तृतीय ज्वरे ॥

पिप्पलीं वर्द्धमानां च पिबेत् क्षीरेण संयुताम्
रसायनमिदं श्रेष्टं तृतीयज्वरनाशनं ॥२२॥
महौषधामृता मुस्ता चंदनोशीरधान्यकं
क्वाथस्तृतीयकं हंति शर्करा मधुयोजितः ॥२३॥

॥ चातुर्थिक ज्वरे ॥

वासा धात्रीफलं दारु पथ्यानागरसाधितः
सितामधुयुतः क्वाथश्चातुर्थकनिवारणः ॥२४॥

॥ चातुर्थिके नस्यं ॥

चातुर्थकहरं नस्यं अगस्तीपत्रजो रसः
रामठं घृतं जीर्णं च नस्यं चातुर्थकं हरेत् ॥२५॥

॥ सर्व ज्वरे ॥

गुडुची भूनिंबधान्याब्दपद्मकं चंदनान्वितं
किरातः पर्प्पटः क्वाथो सर्वज्वरहरः स्मृतः ॥२६॥

॥ सन्निपाते नस्य-नाल ॥

मधूकसारसिंधूत्थः देवोषणकणासमं
प्रज्ञाप्रबोधनं नस्यं सन्निपाते कफात्मके ॥२७॥

श्लो· २१ पद्मकं-पद्मकाष्ठं ।२५ रामठं-हिंगु ।
श्लो· २७ मधूकसारः-यष्टिमधु ।
श्लो· २७ देव-तुत्थं-मोरथुथुं

॥ सन्निपाते अंजनं ॥

कस्तूरी मरिचं वाजिलाला च मधुनांजनं
तंद्रानिवारणं पुंसां व्योषं वा चांजने तथा ॥२८॥

॥ सन्निपाते डंभनः डाम ॥

औषधैरपि दातव्यं संज्ञा यस्य न जायते
पादयोस्तं ललाटे वा दहेल्लोहशलाकया ॥२९॥

॥ मले बंधनम् औषधं ॥

बध्नीयादुदरे तस्य वस्त्रेण यवारिमर्दितं
अजाशकृद्यवात् पिष्टं मलद्वारं च कारयेत् ॥३०॥

॥ सर्वज्वरे लेपः ॥

किरातं कटुका कृष्णा हरितक्युष्णतां गतः
सर्वज्वरे सदा लेपश्चोदरे कारयेद् बुधः ॥३१॥

॥ दोषज्वरे धूपः ॥

दोषज्वरे सदा देयो धूपो ह्यष्टांगसंज्ञितः
कुष्टारिष्टशिवावचा यवाज्यपुर सर्षपाः ॥३२॥

॥ सर्वज्वरे अंजनं ॥

रामठं पिंचुबीजानि सर्पाणां कंचुकी तथा
पिष्ट्वाथ खरसूत्रेण चाजनं सर्वतापजित् ॥३३॥

॥ सर्व ज्वरहरी गुटिका ॥

हिंगुलं वत्सनागं च टंकणं मरिचं कणा
आर्द्रोदकेन दातव्यं गुटी सर्वज्वरापहा ॥३४॥

श्लो. २८ वाजिलाला–अश्वमुखफेनं
श्लो. २९ डंभनः–अग्निशलाकया डंभनं अग्निकर्म डाम
" ३०–बंधनं–बंधाण इति गुर्जरे प्रायः
अर्धांगुल परिमितं रोटिका रूपं उदरोपरिबंधनं—
" ३१–उदरे लेपः–खरड
इति गुर्जरे पत्तलीकृतो लेपरूपोपचारः

॥ सर्वज्वरे चूर्णम् ॥

दिप्याभयाहिंगुवह्निस्त्र्यूषणं जीरकद्वयं
क्षारद्वयं रोचकं च त्रिफला सिंधवत्रयं ॥३५॥
सूक्ष्मचूर्णीकृतं वैद्य उष्णोदकेन दापयेत्
सर्वज्वरहरं नाम चूर्णं वागूभटभाषितं ॥३६॥
न ज्वरेण विना जन्म न ज्वरेण विना मृतिः
अतो ज्वरप्रतीकारं प्रथमं ब्रूमहे वयं ॥३७॥
न वातेन विना पीडा न पित्तेन विना भ्रमः
न कफेन विना शोफो न दाहो म ्वर्जितः ॥३८॥

॥ इति ज्वरचिकित्सा ॥

———:o:———

॥ अतिसार चिकित्सा ॥

उशीरं धान्यकं मुस्ता शुंठी विल्वेन्द्रवालुकं
धातक्यतिविषाक्वाथो ज्वरातिसारनाशनः ॥३९॥

॥ आमातिसारे १ ॥

चित्रकं पिप्पलीमूलं वचा कटुकरोहणी
पाठावत्सकवीजानि क्वाथो ह्यामातिसारजित् ॥४०॥

॥ आमातिसारे २ ॥

पथ्यादारुवचामुस्तैर्नागरातिविषामृतैः
आमातिसारशूलघ्नं क्वाथमेभिः पिबेन्नरः ॥४१॥

॥ आमातिसारे ३ ॥

नागरातिविषामुस्ता पिप्पलं मरिचं तथा
हिंगु कृष्णं च लवणं पाठा कटुकरोहणी ॥४२॥
पेयमुष्णाम्बुना चूर्णं शूलसामातिसारजित्

॥ रक्तातिसारे ॥

पथ्यं लाजाकृतं मंडं पेयं पानियं शीतलं ॥४३॥

विल्वं शक्रजवा भेददाडमीवालकं विषा
धान्यकं मधुयुक्तं च क्वाथो रक्तातिसारजित् ॥४४॥

॥ पित्तातिसारे ॥

रसांजनं सातिविषं धातुकी कुटजं फलं
पित्तातिसारशमनं चूर्णं च तंडुलांबुना ॥४५॥

॥ रक्तातिसारे ॥

क्षीरपिष्टं पिबेल् लोद्रं ज्येष्टा च खरबीजकं
रक्तातिसारशमनं शर्करा मधुयोजितं ॥४६॥

॥ सर्वातिसारे ॥

नागरातिविषामुस्ता भूनिंवामृतवासकैः
सर्वज्वरस्य क्वाथोयं सर्वातीसारनाशनः ॥४७॥

। सर्वातिसारे ॥

धान्यकं नागरं मुस्ता वालुकं बिल्वदाडमे
गडुचीसहितः क्वाथः सर्वातीसारनाशनः ॥४८॥

॥ अतिसारे आर्द्रकरसेन नाभिपूरणं ॥

आर्द्रकस्य रसेनाशु पूरयेन्नाभिमंडलं
नदीवेगोपमं घोरमतिसारं निवारयेत् ॥४९॥

॥ वृद्धगंगाधर चूर्णं ॥

अरलूकघनशुंठीश्रीफलं वालुकं च
कुटज सवरछ्ली धातुकी सैंद्रमूर्वा
अतिविषसहकारास्थीनि् पाठा समोचा
गुडजलमधुना वा वृद्धगंगाधरोयं ॥५०॥

श्लो. ४४ शक्रजवा इंद्रयवाः । भेदः-पाषाणभेदः
,, ४५ धातुकी-धातकी पुष्पं
,, ४६ ज्येष्टा-यष्टिमधु, खरबीजकं इक्षुरबीजं तालमखाना
,, ४७ वासकः-वासा
,, ४८ वालुकं-वालः । गडुची, गुडुची
,, ४९ श्रीफलं विल्वफलं । ऐंद्र-इंद्रयवाः सवरछ्ली-लोध्रं

कफोद्भवं मारुतपित्तसंभवं जयेदतीसारपुराणमामजं
प्रसिद्धगंगाधरचूर्णनामकं सर्वातिसार ग्रहणीगदापहं॥५१॥

॥ अतिसार हरी गुटी ॥

लवंगजातीफलहंशपाक पथ्याहिफेनेन समं विदध्यात्
जयात्रिभागं गुटिकां प्रदद्यात् सर्वातिसारग्रहणीगदार्त्तैः॥५२॥

॥ प्रवाहिकायां ॥

वालविल्वं गुडं तैलं पिप्पलीमूलवासकं
लिह्याद्वातप्रतिहते सशूले सप्रवाहिके ॥५३॥

॥ प्रवाहिकायां ॥

विल्वं च सगुडं सैंद्रं तैलं मरिचयोजितम्
लिह्यात्प्रवाहिकाक्रांतः क्षिप्रं सुखमवाप्नुयात् ॥५४॥

॥ प्रवाहिकायां ॥

अहिखरं गुडो विल्वं मधुना गुडशर्करा
प्रवाहिकां निहंत्याशु पयसा माक्षिकेण वा ॥५५॥

———:o:———

॥ अथ संग्रहणीचिकित्सा ॥

॥ ग्रहण्यां चूर्णं ॥

पिप्पली बृहती व्याघ्री जवखारः कलिंगकः
चित्रकं सारिवा पाठा शठी लवणपंचकं ॥५६॥
तच्चूर्णं पाययेद् दध्ना सुरयोष्णांभसा पिबेत्
महांतं ग्रहणीदोषं शमयेद् दीपनं परं ॥५७॥

॥ लवणभास्कर चूर्णं ॥

सामुद्रं लवणं कार्यमष्टकर्षमितं बुधैः
पंचसौवर्चलं ग्राह्यं विडं सिंधवधान्यकं ॥५८॥

श्लो॰ ५२ पिप्पलीमूल वासकं इत्यत्र पिप्पली विश्वभेषजं इति पाठभेदः ।
,, ५४ अहिखरं–इक्षुरबीजं तालमखाना–मखरो

पिप्पली पिप्पलीमूलं कृष्णाजीरकपत्रकं
नागकेसर तालिसं साम्लवेतसकं तथा ॥५९॥
द्विकर्षमात्राण्येतानि प्रत्येकं कल्पयेद् बुधः
मरीचं जीरकं विश्वा चैकैकं कर्षमात्रकं ॥६०॥
दाडिमं स्याच्चतुःकर्षं त्वगेला चार्द्धकर्षिके
एतच्चूर्णं कृतं सर्वं लवणं भास्कराभिधं ॥६१॥
शाणप्रमाणं देयं तु मस्तुतक्रसुरासवैः
वाते श्लेष्मे च मंदाग्नौ गृहणी रोगनाशनं ॥६२॥

॥ अथ अर्शोरोगे हरस चिकित्सा ॥

॥ तिलादिगुटी ॥

तिला भल्लातकं पथ्या गुडश्चेति समांशकं
दुर्नाम स्वास कासघ्नी प्लीहपांडु ज्वरापहा ॥६३॥
लाक्षा हरिद्रा मांजिष्टा मधुकं नीलमुत्पलं
अजाक्षीरेण पीतानि हर्षरक्तं विनाशयेत् ॥६४॥
कीटमार्यांश्च गोजिह्वया रसो पलप्रमाणतः
एकैकं पानमात्रेण हर्षायां शांतिकारकः ॥६५॥
कुटजस्य फलं लोद्रं धातुकी चेभकेसरं
निलोत्पलं सितायुक्तं चूर्णं हर्षविनाशनं ॥६६॥
कासीसदंतीसिद्धार्थकणवीरेण लेपयेत्
तैलं सार्षपसंमिश्रं हर्षाणां किल नाशनं ॥६७॥
अर्कमूलं शमीपत्रं नृकेशा सर्पकंचुकी
मंजारचर्म्म सर्पिश्च धूपनं हर्षनाशनं ॥६८॥

॥ अथ कृमिरोग चिकित्सा ॥

पलाशबीजं वैडंगं शक्राह्वं रामठं त्रिवृत्

श्लो० ६२ मस्तु-दधिमंडः। ६४ हर्षः-अर्शोरोगः। ६५ हर्षा-यर्शोरोगः। ६६ इभकेसरं-नागकेसरं। ६७ कणवीर-कर्णिकारः। दंती अत्र त्रिवृता। ६८ मंजारः-मार्जारः। ६९ शक्राह्वं-इंद्रयवः। रामठं-हिंगु।

गवां तक्रेणतत् पीतं कृमिकोटि विनाशयेत् ॥६९॥
पलाशं शक्रबीजानि किरातिः कटुकामृता
पिचुमंदं पटोलं च क्वाथो कृमिविनाशनः ॥७०॥

॥ अथ शोफ चिकित्सा ॥

पुनर्नवादिः

पुनर्नवामृतादारु साभया च पटोलिका
विश्वाभ्ररजनीक्वाथोः हंति शोफं च पानतः ॥७१॥

हरितक्यादि

हरीतकी शृंगवेरं देवदारु पुनर्नवा
मूत्रांबुना पीतमेतत् सद्यः श्वयथुनाशनः ॥७२॥
क्षीरं चापि तु गोमूत्रं माहिषं मूत्रमेव च
उष्ट्रीक्षीरं पिबेद्वापि श्वयथोर्नाशनं परं ॥७३॥
मल्लिगस्थानत्याय गुडेन परिमिश्रितम्
क्षीरस्नुक्नागरं चूर्णं श्वयथोर्नाशनं परं ॥७४॥
स्नुक् पिप्पली च दातव्या शोफे वा चोदरे हिता
आम्लं च द्विदलं वर्ज्यं पथ्यं श्रेष्ठं च वर्जरी ॥७५॥

॥ अथ मूत्रकृच्छ्रचिकित्सा ॥

कुष्मांडरसमादाय शर्करासहितं पिबेत्
यस्याग्निदीपसंभूतं मूत्रकृच्छ्रं निवारयेत् ॥७६॥
सहस्रगुणारसपलं पलं शर्करयान्वितं
संमर्दितं पिबेद्यस्तु मूत्रकृच्छ्रं निवारयेत् ॥७७॥

श्लो. ७० किरातिः-किराततिक्तं । कटुका-तिक्ता पलाशं-पलाशबीजं । पिचुमंदः-निम्बत्वचा । ७१ दारु-देवदारु । पटोलिका-पटोलं । ७२ विश्वा-शुंठी । आभ्ररजनी-साभ्रहरिद्रा । ७३ शृंगवेरं-शुंठी ७५ स्नुक स्नुहीदुग्धं-स्नुहीदुग्धेन भावितं पिप्पली चूर्णं रक्तिकाद्वयेनारभ्य द्वादशरक्तिका पर्यंतं रोगानुसारं देयं । वर्जरी-बाजरी इति प्रसिद्धं धान्यं । ७६ कुष्मांडरसं कर्षद्वयं तावन्मात्रा शर्करा संमिश्र्य सप्त दिनं यावत्पिबेत् । ७७ सहस्रगुणा शतावरी ।

जवक्षारजलं तद्वत् सितया शीतवारिणा
कर्षमात्रं तु तत्पीतं मूत्रकृच्छ्रं निवारयेत् ॥७८॥
मूत्रकृच्छ्रे जवक्षारं चणकं हिंगु योजितं
हितं भवति दाहाढ्ये वातजे च त्रिदोषजे ॥७९॥
पिबेत् शतावरीमूलं शीतांबुनाथ कृच्छ्रहृत्
रंभारसो द्विपलिकः शर्करासंयुतो भवेत् ॥८०॥
एला पाषाणभेदश्च रेणुकाखदिरोद्भवं
मधुयष्टी कणापथ्या सुक्ष्ममेषां तु चूर्णितं ॥८१॥
तवराजमधूपेतं निपीतं तंडुलांबुना
सर्वाणि मूत्रकृच्छ्राणि नाशयत्यतिवेगतः ॥८२॥
गौक्षीरेण गुडः पीतो मूत्रकृच्छ्रविनाशनः
एला दध्यंभसा पीतो भोजने गोधुमा हिताः ॥८३॥
यष्टीमधु चाश्मभेदश्चंदनं रक्तचंदनं
रक्ततंडुलतोयेन पीतं मूत्ररुजापहं ॥८४॥
वालुकोशीरयष्टीकं कुष्टं धान्यं यवा मधु
क्षीरेण क्वाथः संपीतो मूत्रकृच्छ्ररुजापहः ॥८५॥

॥ अथ मूत्ररोधचिकित्सा ॥

पिबेत् कर्कटिकाबीजं त्रिफला सिंधवान्वितं
उष्णांबु चूर्णितंपीतं मूत्ररोधं शमं नयेत् ॥८६॥
अजाक्षीरेण संमिश्रं जातिमूलं पिबेन्नरः
तैलेन पद्मिनीकंदं पीत्वा रोधं निवारयेत् ॥८७॥

श्लो. ७८ जवक्षारः-यवक्षारः कर्षपादः सिता-शर्करा चतुः कर्षमिता समदिनं पेयं शीतवारिणा मिश्रितं । ७९ चणकं-चणक प्रमाणं हिंगु । ८१ रेणुका-निर्गुंडी बीजं । खदिरोद्भवं-खदिरसारः । ८२ तवराजः-तवक्षीरी । ८४ अश्मभेदः पाषाणभेदः । ८५ वालुकः वालकः । धान्यं-धान्याकः । यवाः यवधान्यं । ८७ जातिमूलं-जातिनामक पुष्पलतायाः मूलं ।

पीतो दारुनिशाक्वाथः समधुर्मूत्ररोधहृत
क्षीरेण शर्करा पीता त्रिभूतिस्तिलसंभवा ॥८८॥
त्रिफलासगुडः क्वाथो मूत्ररोधं निवारयेत्

॥ मूत्ररोधे लेपः ॥

त्रिभूतिर्वृषशृंगाणि लेपात् रोधं निवारयेत् ॥८९॥

॥ अथ प्रमेह चिकित्सा ॥

त्रिफला गोक्षुरं वासा दार्व्यमृताचयष्टिकं
क्वाथो मधुयुतः पीतो हंति सर्वप्रमेहकं ॥९०॥
विल्वीदलरसो ग्राह्यः पलमानस्तु शर्करा
सप्त रात्रं पिवेद्यस्तु प्रमेहस्तस्य नश्यति ॥९१॥
खदिरं शर्करा दारु पाठा रजनि मुस्तका
गुडेन गुटिकां दद्याद् हरेद्रोगं प्रमेहजं ॥९२॥
गडुच्या स्वरसः पेयो मधुना सर्वमेहजित्
निशाकल्कयुतो धात्रीरसो वा माक्षिकान्वितः ॥९३॥
वचाभया वंशलोचा खदिरः शर्करायुतः
सर्वमेहहरं चूर्णं त्रिफला मधुना लिहेत् ॥९४॥

॥ अथ अश्मरी (पाणवी) रोग चिकित्सा ॥

असाध्यो ह्यस्मरी रोगो ह्यौपध्या न च सिध्यति
शस्त्रेण साध्यो रोगोयं तथापि चौषधं वदेत् ॥९५॥
धात्रीपल्लव नीर्यासरसतिलैतैलसमन्वितः
दधिमंडयुतं पेयमश्मरीमाशु पातयेत्
यः पिवेत् प्रातरुत्थाय ह्यस्मरीं शमयेद् ध्रुवं ॥९६॥

श्लो ८८ दारुनिशा–दारुहरिद्रा। ८९ त्रिभूतिः शुष्कगोमयभस्म राख वानी इति प्रसिद्धा। वृषस्य शृंगं तयोर्लेपो लिंगे कृतः मूत्ररोधहरः। ९० दार्वी–दारु हरिद्रा। ९१ विल्वी–विल्ववृक्ष। ९२ रजनि हरिद्रा।

शृंगवेरं जवक्षारं पथ्या कोलायकान्वितं
दधिमंडयुतोत्सर्गमश्मरीमाशु पातयेत् ॥९७॥
तिलाश्वापामार्गफलं पलाशवृक्षसंभवः
क्षारः पेयोऽविमूत्रेण शर्कराश्मरिपातनं ॥९८॥
यः पिबेद्रजनीं सम्यक् सगुडां तुषवारिणा
तस्याशु च चिरारूढामश्मरीं पातयेद् ध्रुवं ॥९९॥
शुंठी गोक्षूरकं चैव वरुणस्य त्वचस्तथा
क्वाथो गुडो जवक्षारो चाश्मरीरोगनाशनं ॥१००॥
त्रुसमूलकृतः क्वाथो जलेनोत्काल्य पानतः
अश्मरीरोगनाशाय हेमा हरीतकी हिता ॥१०१॥

॥ अथ वातरक्तचिकित्सा ॥

गडुच्याः स्वरसं कल्कं चूर्णं वा क्वाथमेव च
प्रभूतकालमासेव्यं मुच्यते वातशोणितात् ॥१०२॥
मंजिष्ठा त्रिफला तिक्ता वचा दारु निशामृता
निंबश्चैषां कृतः क्वाथो वातरक्तविनाशनः ॥१०३॥
धातुकी सर्जमंजिष्ठायष्टिगुगुलुपायसं
घृतयुक्तं पचेद् वह्नौ चाभ्यंगात् वातरक्तनुत् ॥१०४॥

॥ अथ अजीर्ण चिकित्सा ॥

॥ सर्वाजीर्णहरी गुटिका ॥

हिंगु त्रिकटुकं पाठा हपुषा चाभया शठी
अजमोदाश्वगंधा च तिंतडीकाम्लवेतसौ ॥१०५॥
दाडिमं पुष्करं धान्यमजाजी चित्रकं वचा
द्वौ क्षारौ लवणे द्वे च चव्यमेकत्र कारयेत् ॥१०६॥
भावयेन्मातुलिंगस्य रसेनार्द्रकनिंबुकात्
बहुशो गुटिका बद्धा सर्वरोगविनाशका ॥१०७॥

श्लो. ९८ अपामार्गफलं-अपामार्ग बीजानि पलाशवृक्षसंभवः -पलाशं प्रज्वाल्य कृतः । कोलायकः बदरीफलास्थीनि ।

ग्रहण्यर्शोविकारे च प्लीहपांड्वामयेऽरुचौ
मलबंधे च हिक्कायां कासे श्वासे गलग्रहे ॥१०८॥
करंजनिंबशिखरीगडुच्यर्जकवत्सकैः
पीतः कषायो विमलो घोरां हंति विसूचिकां ॥१०९॥

॥ अथ मंदाग्नि चिकित्सा ॥

सैंधवं नागरं दिप्या पिप्पलीमूलकं कणा
रुचकं चाभयाजाजी चूर्णं मंदाग्निदीपनं ॥११०॥
नागरं पिप्पलीमूलं धान्यकं कृष्णजीरकं
दाडिमं मरिचं साम्लं चित्रको हस्तिपिप्पली ॥१११॥
अजमोदा कणाजाजी पथ्यारुचकरामठैः
क्रमाद्विवर्धितैरेभिश्चूर्णं कुर्याद्विचक्षणः ॥११२॥
जंबीरस्य रसेनैव तथार्द्रकरसेन वा
भावितं चातपे शोप्यं पुनर्दृषदि चूर्णयेत् ॥११३॥
ततो विडालपदकं पिबेदुष्णेन वारिणा
मंदाग्निना सदा खाद्यं तीक्ष्णो भवति पावकः ॥११४॥
भुक्तस्योपरि यद्भुक्तं भस्मीभवति तत्क्षणात्

॥ अथ गुल्म चिकित्सा ॥

रोहिषश्चारुणः शिग्रुरग्निमंथः पुनर्नवा
करंजो गूढपर्णश्च कषायो गुल्मनाशनः ॥११५॥
रामठं पंचकोलं च पंचैव लवणानि च
पूतना चाजमोदं च जवानी हिंगुपत्रिका ॥११६॥
क्षारत्रयं विडंगानि रसोनं च क्षपाद्वयं

श्लो॰ १०८ मलबंधे मलावरोधे। १०९ अर्जकः आंजणियुं। वत्सकः कुटजत्वक्। ११० दिप्या–अजमोदा, रुचकं संचल लवणं। १११ कृष्णजीरकं तिक्तजीरकं–काळीजीरी इति प्रसिद्धं, हस्तिपिप्पली-गजपिप्पली। ११५ रोहिषः रोहीतकत्वक्, अरुणः शिग्रुः रक्तशिग्रोस्त्वक, हिंगुपत्रिका तिलपर्णी.

एतत्संकुट्य संभारं सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् ॥११७॥
बिडालपदमात्रं तु भक्षयेत् प्रातरुत्थितः ॥९७॥
पंचगुल्ममथोद्गारं शूलहृद्रोगविद्रधिं
उष्णोदकेन पीतं च तक्रेण सुरभेर्जलैः ॥९८॥
नाशयेत् पीतमात्रेण तमः सूर्योदये यथा ॥११९॥
आम्लवेतसनिर्यासो लवणं विडपूर्वकं
रामठं स्वर्जिकाक्षारस्तक्रपीतं च गुल्महृत् ॥१२०॥
टंकणं स्वर्जिकाक्षारो मातुलिंगेन दापयेत्
कुमारिकारसैः पीतं पंचगुल्मान्विनाशयेत् ॥१२१॥

॥ अथ पांडु चिकित्सा ॥

त्रिफलां लोहचूर्णं तु मधुना सह भक्षयेत्
हरेत् पांडुगदं पंच तथा व्योषेण दापयेत् ॥१२२॥
फलत्रिकामृतावासा तिक्ताभूनिंबनिंबजः
क्वाथः क्षुद्रयुतो हन्यात् पांडूरोगं सकामलं ॥१२३॥
क्षीरं मूत्रं पिबेत् पक्वं गवां माहिषमेव च
पांडुरोगं हरेत् सद्यः सप्ताहं त्रिफलारसः ॥१२४॥

॥ अथ कामला चिकित्सा ॥

द्रोणपुष्पीरसः पीतो रोचनालोचनांजनात्
अपामार्गशिफा पीता सतक्रा कामलापहा ॥१२५॥
गुडार्द्रकयुता हंति कामलां त्रिफला सिता
एरंडमूलकं पीतं मधुना हंति कामलां ॥१२६॥
द्रोणपुष्पीरसैश्चक्षुः पूरितं याति कामला
हिंगु वा लोचने न्यस्तं कामलोन्मूलनक्षमं ॥१२७॥

श्लो० ११८ पूतना-हरीतकी, क्षपाद्वयं-हरिद्रा दारुहरिद्रा । १२१ मातुलिंगं-बीजपूरकं । १२२ लोहचूर्णं-लोहभस्म । १२३ भूनिंबः किराततिक्तं । १२५ द्रोणपुष्पी-कुबो, रोचना-गोरोचनं, लोचना-वंशलोचनं ।

वंध्याककौंटकीमूलं नस्येनैवोपशाम्यति
विष्णुक्रांताशिफा तत्र पीता वापि विनाशनी ॥१२८॥
करंजशिंया गडूच्या वा दार्व्या निंबस्य वा रसं
पीतः प्रातर्मधुयुतं कामलार्तः पिबेन्नरः ॥१२९॥
हरिद्रात्रिफलानिंबबलामधुकसाधितं
सक्षीरं माहिषं सर्पिः कामलाहरमुत्तमं ॥१३०॥

॥ अथ हारिद्रकचिकित्सा ॥

छिन्नोद्भवा च रजनी पर्पटाश्च पुनर्नवा
समांशकैः कृतः क्वाथो हारिद्रकविनाशनः ॥१३१॥
किरातं मधुकं मुस्तामृता वासा च निंबकैः
पीतः क्वाथो मधुयुतो हारिद्रकविनाशनः ॥१३२॥
देयं हारिद्रके दुग्धं सगुडं ज्वरवर्जिते
यवागुः सज्वरे देया यूषो वा सर्वदा हितः ॥१३३॥

॥ अथ कुष्टरोग चिकित्सा ॥

तिलास्तैलं कुलत्थाश्च वल्लाःकालिंगमूलकाः
माहिषं दधि वृन्ताकमष्टौ कुष्टस्य कारकाः ॥१३४॥
कुष्टिभ्यः पृच्छनं पानं शृंग्यलावुजलौकसः
वमनं च बलं ज्ञात्वा विधेयं सविरेचनं ॥१३५॥
नृपादिबालवृद्धानां भीतानां योषितामपि
निर्विषं स्यादुपायेन रक्षेत्कष्टं जलौकसां ॥१३६॥

श्लो. १२८ वंध्याककोंटकी–वांझकंटोली, विष्णुक्रांता-शिफा–श्वेतगिरिकर्णी मूलं कंटकारीमूलमिति केचित् । दार्वी–दारुहरिद्रा । १३१ छिन्नोद्भवा-गुडुची, रजनी-हरिद्रा, पर्पटः रेणुः खडसलियो पित्तपापडो, । १३४ वल्ला-वालनामकद्विदल धान्यं, कालिंग-तरबुच फलं, मूलकं-मूळानामक कंदं, वृन्ताकं रिंगणां । १३५ पृच्छनं-प्रश्नः ।

॥ अथ शिवादि क्वाथः ॥

शिवा पथ्याऽमृपा निंबवल्कलं कुष्ठहृत्सदा ॥
पटोली पाटला राजी शाल्मली चित्रकामृते ॥१३७॥
तुंबरुः कटुकी दंती करंजश्च बिभीतकं
भार्ङ्गी वरुणमित्येषां क्वाथः प्रेयस्त्रिसप्तकं ॥१३८॥
प्रथमे प्रथमे यामे घर्मसेवाथ भोजनं
शालिभोज्यं प्रकर्तव्यं पश्चान्निद्रा विधीयते ॥१३९॥
एतत्कृतेन नश्यंति कुष्ठान्यष्टादशाथ च
श्वेतकुष्ठं गजचर्म नो साध्यं कथितं बुधैः ॥१४०॥

॥ अथ कुष्ठहरलेपः ॥

अर्कमूलं हरेत्कुष्ठं वारिघृष्टं प्रलेपनात्
कासमर्दशिफा पिष्टा हन्यात्कुष्ठं तुषांबुना ॥१४१॥

॥ अथ चित्रीकुष्ठ-सिध्मकुष्ठ चिकित्सा ॥

रंभाक्षारो निशायुग्मं गंधकं मूलबीजकं
तक्रेणोद्वर्तनं कुर्यात् पुंसां सिध्मप्रणाशनं ॥१४२॥
रंभाक्षारो निशाचूर्णं टंकणं निंबुकं तथा
सर्वांगसंभवं सिध्म लेपान्नाशयति क्षणात् ॥१४३॥

॥ पामा चिकित्सा ॥

शिला पारद कुष्ठानि निशा लांगलिकोद्भवं
चूर्णं गोमूत्रसंपिष्टं पामा याति प्रलेपनात् ॥१४४॥
अर्कपत्ररसे पक्वं रजनीकल्कसंयुतं
साधयेत्सार्षपं तैलं लेपात्पामानिवारणं ॥१४५॥

॥ अथ गजचर्म-दद्रुकंडुचिकित्सा ॥

चक्राह्वचूर्णं स्नुक्क्षीरभावितं मूत्रयोजितं

श्लो. १३७ राजी-राजिका राई । १३९ धर्मसेवा प्रथमयाम पर्यंतं सूर्यातपसेवनं । १४४ शिला मनःशिला । १४६ चक्राह्व -चक्रमर्द कुवाडियो ।

रवितप्तः कृतो लेपः दद्रुकंडुविनाशनं ॥१४६॥
गुग्गुलुर्गंधकं लिंबुष्टंकणं शर्करायुतं
वाकुची चाहिफेनं च लेपाद्दद्रुविनाशनं ॥१४७॥

॥ अथ विपादिका पादस्फुटन चिकित्सा ॥

शुक्तिकाभस्म सिंधूत्थं सर्पिः सर्जरसं पयः
पादस्फुटनहा लेपः पादः कोमलतां व्रजेत् ॥१४८॥

॥ अथ बंधकोष्ठः मलावरोध चिकित्सा ॥

॥ अभयादि मोदकः ॥

अभया पिप्पलीमूलं मरिचं विश्वभेषजं
पत्रं तगरकं मुस्ता विडंगामलकानि च ॥१४९॥
एतानि समभागानि दंती त्रिगुणिता मता
त्रिवृदष्टगुणा ज्ञेया षड्गुणा चात्र शर्करा ॥१५०॥
मधुना मोदकान्कृत्वा अक्षमात्रान् भिषग्वरः
एकैकं भक्षयेत्प्रातः शीतं चानुजलं पिबेत् ॥१५१॥
सम्यग्विरेचनं तावद्यावदुष्णं न सेवते
बंधकोष्टं मलानां च शीघ्रं चूर्णं निवारयेत् ॥१५२॥

॥ अथ शोफोदर चिकित्सा ॥

॥ सर्वोदरहरी गुटिका ॥

दंतीमूलं वक्रा दारु त्रिफला चेंद्रवारुणी
यवचिंचाद्रिकर्णी च नीली कंपिल्लकं निशा ॥१५३॥
हिमजा जयपालश्च कटुकुष्ठपुनर्नवाः
शंखिनी चित्रकं कृष्णा तिक्ता स्नुगंबुरोहिणी ॥१५४॥
सौवर्चलं तथा कुष्ठं रसोनं समभावितं

---

१४७ लिंबुः निम्बुकं । १५३ वक्रा । यवचिंचा भूम्यामलकी । अद्रिकर्णी श्वेत गिरिकर्णी । नीलि नीलिनी गळी । हिमजा अस्थिहीना हरीतकी हिमेजसंज्ञा । १५४ स्नुक् स्नुही मूलं । अंबुरोहिणी-जलजंबुः ।

चूर्णयित्वाथ सर्वाणि स्नुहीक्षीरेण भावयेत् ॥१५५॥
काश्यपात्मजदुग्धेन भावयेच्छोषयेच्च तत्
गुडेन गुटिका सूक्ष्मा सर्वोदरविनाशिनी ॥१५६॥
क्षारद्वयानलव्योपनीलीलवणपंचकं
चूर्णितं सर्पिषा पेयं सर्वगुल्मोदरापहं ॥१५७॥
गवाक्षो शंखिनी दंती नीली तिक्तकसंयुता
सर्वोदरविनाशाय गोमूत्रेण समं पिबेत् ॥१५८॥
सप्ताहं माहिपं मूत्रं पयसा वाम्बुवर्जितं
पीतमौष्ट्रं पयो मांसं श्वयथूदरनाशनं ॥१५९॥

॥ अथ प्लीहोदर चिकित्सा ॥

भक्षितं नाशयेत्प्लीहं मदिराशनतोचिरात्
यस्याभिधानमुच्चार्य हारयेदिंद्रवारुणं ॥१६०॥
मूलमुत्क्षिप्यते दूरं तस्य प्लीहो विनश्यति
चिरं च वाणपुंखाया मूलिका दंतचर्विता
गलिता नाशयेत्प्लीहं यवागुभोजनं ध्रुवं ॥१६१॥
लवणान्यर्कपत्राणि भांडेन्तर्भूमिवह्निना
दग्धानि मधुलीढानि प्लीहो नश्यति दारुणः ॥१६२॥

॥ अथ जलोदर चिकित्सा ॥

त्रिवृता दंतिनीमूलं देवदालीयवासकं ॥१६३॥
कुटजांघ्रियुता किंवा कटुरोहणिमूलिका
ऐकैकं वारिणा पीतं हंति सर्वजलोदरं
पथ्या ससैंधवा चापि पीता हंति जलोदरं ॥१६४॥

श्लो. १५६ काश्यमात्मजः अर्कवृक्षः तस्यदुग्धं । १५७ अनलः चित्रकः । १५८ गवाक्षी वृहदिंद्रवारिणी गावसुकडां । १५९ ओंटं उष्ट्रीजं । १६० प्लीह.-प्लीहा । मदिराशनतः नित्यं मदिरापानात् । १६१ वाणपुंखा-शरपुंखः । १६२ लवणानि पंच लवणानि । १६३ कासक कासमूलं । १६४ कटुरोहणी-तिक्ता ।

तैलं एरंडमूलेन पथ्या तत्समसैंधवं
कणा गोमूत्रपीतानि हन्ति रोगं जलादरं ॥१६५॥

॥ अथ रक्तपित्त-रक्तस्राव चिकित्सा ॥

वासकस्य रसो यष्टिः शर्करा मधुमिश्रिता
कामलं देहरक्तं च हंति पित्तं च तत्क्षणात् ॥१६६॥
ह्रीबेरं मधुकं धान्यं चंदनं यष्टिकामृता
वृषोशीरः पीचुमंदस्त्रिफला मींढियावलं ॥१६७॥
मंजिष्टासहितः क्वाथः शर्करामधुमिश्रितः
पीतो हरेद्रक्तपित्तं सर्वदेहभवं तथा ॥१६८॥

॥ अथ नासारक्ते ॥

रसो दाडिमपुष्पोत्थो रसो दूर्वाभवोऽथवा
आढरूषरसस्तद्वन्नासास्यरुधिरं हरेत् ॥१६९॥
अश्मभेदो घृते घृष्टो नासायां दीयते यदि
रक्तस्रावं हरेदाशु रक्तष्ठीविसमुद्भवं ॥१७०॥

॥ अथ नासाकीटे ॥

कर्पूरं पुष्पतैलेन नासायां क्षिप्यते यदा
पतंति कीटका नासात् रक्तस्रावश्च नश्यति ॥१७१॥

॥ अथ प्रदर चिकित्सा ॥

वालुकं तवराजं च चंदनं शर्करायुतं
तंडुलांबु पिबेन्नित्यं योनिमेहनिवारणं ॥१७२॥
दुग्धेन संयुतः पीतो हंत्यपामार्गपत्रजः
अथवामलकीचूर्णं तंडुलोदकमिश्रितं ॥१७३॥

श्लोकः १६६ यष्टिः मधुयष्टिः । १६७ पीचुमंदः-पिचुमंदः, मींढियावलः आवर्तकी-सनाय । १७० अश्मभेदः-पाषाणभेदः । १७१ पुष्पतैलं फुलेल तैलं । १७२ वालुकं प... तवराजं तवक्षीरी । १७३ अपामार्गपत्रजः रसः इ...

तथा मेघनादरसो मधुयुक्तं रसांजनं
या पिबेत्प्रत्यहं नारी प्रदरं तस्य नश्यति ॥१७४॥
वला सिता वेकरं वा पडवासः सितायुतः
गवां दुग्धे पिबेन्नारी चतुर्थो प्रदरं व्रजेत् ॥१७५॥

॥ अथ प्रदरहरी धारण गुटिका ॥

दाडीमसारं पडवासः अश्मभेदो रसांजनं
गुडेन गुटिकाः कुर्याद्योनिमध्ये क्षिपेत्स्त्रियाः ॥१७६॥
प्रदरं नीलं पीतं वा श्वेतं रक्तं तथैव च
नारीणां हरते शीघ्रं चरकेण च भाषितं ॥१७७॥

॥ अथ गर्भस्रावे ॥

शृंगाटकं वला रक्तं चंदनं शर्करा समं
चूर्णं तंडूलतोयेन पिबेद् गर्भपरिस्रवे ॥१७८॥

॥ अथ गर्भपात निवारणार्थं ॥

लज्जालुर्धातकीपुष्पमुत्पलं मधुलोद्रकं
जलछाया स्त्रिया पीतं गर्भपातं निवारयेत् ॥१७९॥
कपित्थविल्वत्रिवृताः पटोलेक्षुनिदिग्धका
मूलानि क्षीरसिद्धानि दापयेद् भिषगष्टमे ॥१८०॥

॥ अथ नष्ट पुष्पे पुष्पानयनं ॥

तिलक्षारो गुडो व्योषं घृतं भांर्गीयुतं पिबेत्
पानं रक्तभवे गुल्मे नष्टपुष्पे च योषितां ॥१८१॥

॥ अथ ऋतुजननी वर्ति ॥

तुंवीवीजं जवक्षारो दंतीकल्कं कणागरु

श्लो. १७५ सितां शर्करां, वेकरं-वेकरीयो । पडवासः स्वनामख्यातः । १७८ शृंगारकं-सिंगोडां इतिख्यातं । १७९ जलछाया-जलजंवुकः । १८० इक्षु-इक्षुमूलं । निदिग्धका-कंटकारी । १८२ जवक्षारः-यवक्षारः । कणा पिप्पली ।

कामस्य च फलं वर्त्तिर्त्रिक्षीरेण निर्मिता
योनिमध्यस्थिता पुष्पं जनयेत्तत्र योषितां ॥१८२॥

॥ अथ गर्भतो रक्तस्रावस्तंभनं ॥

गर्भिणीगर्भतो रक्तं स्तंभयेत् पतितं ध्रुवं
पारावतमलं पीतं त्र्यहं तंडुलवारिणा ॥१८३॥

॥ अथ योनि शूले ॥

विशालाज्यपयोयुक्ता लेपतो योनिशूलहृत्
हृच्छूले बीजपूरस्य रसः सैंधवसंयुतः ॥१८४॥

॥ अथ योनिशूलहरो लेपः ॥

एरंडतैलसंयुक्तमुंडीमूलप्रलेपतः
नवप्रसूतनारीणां योनिशूलं प्रशाम्यति ॥१८५॥
योनिशूलहरं पीतं सर्पिः कार्पासबीजयुक्
आखुमांसेन पक्वं वा तैलं याति विलेपनात् ॥१८६॥
एक एव यवक्षारो योनिशूलं निवारयेत्

॥ अथ योनि शैथिल्ये ॥

कारेलीकंदलेपेन योनिर्गाढा भवेद् ध्रुवं ॥१८७॥

॥ अथ स्तनपीडायां योन्यादि शूले ॥

स्तनपीडाशमं याति कृष्णावृषकसैंधवं
अजमोदा यवक्षारश्चित्रकं शर्करान्वितं ॥१८८॥
स्तनपीडा शमं याति विशालामूललेपतः
कुमारीकंदलेपेन सहरिद्रातिवेगतः ॥१८९॥
वचोपकुंचिका जातिकृष्णावृषभसैंधवं
अजमोदा जवक्षारश्चित्रकं शर्करान्वितं ॥१९०॥

श्लो. १८२ कामस्य फलं मदनफलं मींढोळ। १८४ विशाला इंद्रवारुणी। १८५ मुंडी गोरखमुंडी। १८६ आखुमांसं मूषकमांसं। १८७ कारेली-कारवल्ली शाकविशेष वासा। १९० उपकुंचिका कलौंजी जीरकं

पिष्ट्वा प्रसन्नयालोड्य खादेद् घृतमनर्गलं
योनिपार्श्वार्तिहृद्रोगगुल्मार्शो विनिवर्तयेत् ॥१९१॥

॥ अथ सूतिकारोगे ॥

लविंगं दशमूलं च क्षुद्रा भार्गी महौषधं
ब्राह्मी पुष्करमूलं च भूनिंबं गजपिप्पली ॥१९२॥
मुस्ता शृंगी शठी चित्रं त्रायमाणा सपिप्पली
रास्ना वचा देवदारु पिप्पलीमूलवासके ॥१९३॥
वत्सकत्वक् चातिविषा क्वाथश्चाष्टावशेषितः
सूतिकासर्वरोगेषु लविंगादिः प्रशस्यते ॥१९४॥

॥ अथ प्रसूत समये जात रोगे ॥

मरिचं पिप्पली शुंठी जवक्षारोथ पूतिका
कुष्मांडं चव्यकं चित्रं भार्ग्गी च शतपुष्पिका ॥१९५॥
अष्टावशेषितः क्वाथो मरिचादिः स्मृतो बुधैः
प्रसूतसमये जातं रोगं हंति न संशयः ॥१९६॥

॥ अथ क्षय रोगे ॥

असाध्यो हि क्षयो रोगो पंचधा परिकीर्तितः
राज्यक्ष्मणि मृत्युः स्यात् यथा किंचिच्चिकित्सितं ॥१९७॥
अमृतावासकक्वाथः पिप्पलीमधुसंयुतः
प्रातः पीतो हरेत्कासं श्वासं क्षयं ज्वरं तथा ॥१९८॥
श्वेतास्तंदुला अर्कक्षीरे पिष्ट्वा गुटीं च कारयेत्
टंकप्रमाणां मधुना भक्षेत् क्षयविनाशनी ॥१९९॥
पिप्पलीं वर्धमानां च दापयेद् दुग्धवारिणा
भोजयेच्छष्टिकान्नं च सर्पिषा दुग्धसंयुताम् ॥२००॥
क्षयरोगविनाशाय जीर्णज्वरं ततःपरं

श्लो. १९२ लविगं लवंगं । १९४ वत्सकत्वक्-कुटजत्वक् ।
२०० षष्टिकान्नं–साठीचावल ।

कासं श्वासं पीनसं च हरते वृद्धपिप्पली ॥२०१॥

॥ अथ कासरोगे ॥

छिन्नात्रिकटुकं भांर्गी वासा क्षुद्रा घनो शठी
पिप्पलीमूलरजनीदेवपुष्पाणि कट्फलं ॥२०२॥
शृंगी पोखरमूलं च किरातं कटुरोहिणी
एष क्वाथो ज्वरं हन्यात्कासं श्वासं तथैव च ॥२०३॥
आढरूषकपत्राणि पिचुमंददलानि च
तुलसीपत्रं समधु शठी शृंगी मरीचकं ॥२०४॥
विभीतं पिप्पलीमूलं कणा खदिरसारजं
चूर्णं शुंठीगुडयुतं लिह्यात्कासे कफात्मके ॥२०५॥
कट्फलं पुष्करं भांर्गी कृष्णा च मधुना सह
कासश्वासज्वरहरः श्रेष्ठो लेहः कफात्मके ॥२०६॥
गुडार्द्रकं कासहरं चक्षुष्यं बळवर्धनं
तथैव मधुसंयुक्तं कफकासनिसूदनं ॥२०७
मूलं च शरपुंखाया कफकासहरं परं
गुडेन दाडिमीछल्ली खादेत्कासनिवर्हणं ॥२०८॥
दिने न शयनं कुर्यात् तैलं खंडं न भोजयेत्
न नक्तं दधि भुंजीत न सेवेतातिशीतलं ॥२०९॥
यवक्षारमरीचाक्षत्वग् देवकुसुमं समं
खदीरसारसंयुक्तं चूर्णमेकत्र कारयेत् ॥२१०॥
वब्बूलक्वाथे तन्मर्द्य गुटी चणप्रमाणतः
वक्त्रे च धारयेद्यस्तु कासं पंचविधं हरेत् ॥२११॥
अर्कपुष्पं लवंगं च त्रिकटु त्रिफला समं
रजनी कुबेरकं वासा टंकणं चाहिफेनकं ॥२१२॥
कट्फलं पौष्करं भांर्गी व्याघ्री शृंगी च शैलकः

श्लो. २०३ पोखरमूलं पुष्करमूलं । २०८ छल्ली त्वचा ।

पिप्पलीमूलापामार्गे चूर्णमेकत्र कारयेत् ॥२१३॥
गुडे वा मधुना कुर्याद् गुटी बोरप्रमाणतः
पंचकासहरी सद्यः प्रातर्नित्यं च भक्षयेत् ॥२१४॥

॥ अथ श्वासे ॥

सिंही सनागरा भांर्गी क्वाथश्चाष्टावशेषितः
मधुनो सितया युक्तो जयेत् श्वासं सुदारुणं ॥२१५॥
अजामूत्रे पचेच्चाक्षं मधुना सह लेहयेत्
कासं श्वासं हरेत्सद्यस्तथा कनकधूपितं ॥२१६॥
रोचना खादिरं सारं हंसपाको लविंगकं
त्रिकटुं पिप्पलीमूलं टंकणं वत्सनाभकं ॥२१७॥
आकल्लकं कबाचानी अक्षत्वक् चैव गैरिकं
पिष्ट्वा गुटी मुखे धार्या पंचश्वासान् विनाशयेत् ॥२१८॥
एला नागं तथा ताम्रं सिता चाकल्लकं तथा
लविंगमहिफेनं च कर्पूरं जातिपत्रिका ॥२१९॥
नागवल्लिरसे बद्धा गुटी चणकमानतः
भक्षयेद्यो निशि प्रातः पंचश्वासं विनाशयेत् ॥२२०॥
गुडं कटुकतैलेन मिश्रयित्वा समं लिहेत्
त्रिसप्ताहप्रयोगेण श्वासो निर्मूलतां व्रजेत् ॥२२१॥
श्वासे न द्विदलं चेव्यं न शीतं न विदाहि च
ज्वरे चोक्तानि पथ्यानि कासे चोक्तानि तानि तु २२२

॥ अथ हिक्कायां ॥

कोलमज्जांजना लाजा तिक्ता कांचनगैरिकं

श्लो. २१४ बोरं बदरीफलं। २१५ सिंही-कंटकारी । २१६ अक्ष विभीतकफलत्वक् । कनकधूपिते धत्तूरपत्रधूमः । २१७ हंसपाकः हिंगूलः । २१८ कबाचानी कबाबचीनी-चणकबाब । २१९ जातिपत्रिका जातिपत्री-जावंत्री । २२१ कटुकतैलं सर्षपतैलं । २२३ कोलमज्जा बदरीफलांतर्गतबीजं । अंजना अलक्तकः कांचनं-कनकपत्रं ।

कृष्णा धात्री सिता शुंठी कासीसोदधिफेनके ॥२२३॥
पाटला सफला पूगं कृष्णा खर्जूरमुस्तके
पडेते च पृथग् लेहा हिक्काघ्नाः क्षौद्रसंयुताः ॥२२४॥
मधुकं मधुसंयुक्तं पिप्पली शर्करान्वितं
नागरं गुडसंयुक्त हिक्काघ्नं भेषजत्रयं ॥२२५॥
स्तन्येन मक्षिकाविष्ठा नस्यं वालक्तकांवुना
योज्यं हिक्काभिभूताय स्तन्यं वा चंदनान्वितं ॥२२६॥
कासमूलं घृतस्निग्धं धूपो हिक्काविनाशनः
रजनी वा मरीचं वा धूपो हिध्माविनाशनः ॥२२७॥

॥ अथ छर्दिरोगे ॥

शक्रा वचामृता विल्वं दुर्वा लाजा सुशीतला
जलेन मधुना युक्तं पाने च पंचछर्दिहा ॥२२८॥
जातीपत्ररसः कृष्णा दूर्वारसः सशर्करः
लाजा मरीचं मधुना हंति छर्दिं च पंचधा ॥२२९॥

एलालवंगगजकेसरकोलमज्जा
लाजाप्रियंगु घनचंदन पिप्पलीनां ॥
चूर्णानि माक्षिकयुतानि समानि लिह्यात्
छर्दिं निहंति कफमारुतपित्तजां च ॥२३०॥

अंगारमंडका चाज्यं छर्द्यां पथ्यं प्रशस्यते
न चोष्णतोयपानं च कर्तव्यं वमनादिते ॥२३१॥

श्लो. २२४ सफला त्रिफला सहिता । पुंगं पूगीफलं । २२५ मधुकं यष्टिमधुमूलं । २२६ अलक्तकांवुना अंजनककाथेन । २२९ जातीपत्ररसः जातीनामकलतायाः पत्राणां रसः । २३१ अंगारमंडका निर्धूमाग्नि पक्वा वाटी ढोसा इत्याख्याळोधूमजा वर्जरीसंभवा वा पुंग्ररोटिका तैलेन घृतेनवा भावितस्य पिष्टस्य कठिनवंधपूर्वकंकृता ।

॥ अथ शूले ॥

कुस्तुंबरं त्रिलवणं यवानी पुष्कराह्वयं
यवक्षारोभयाहिंगु विडंगान्युदधेःफलं ॥२३२॥
पिबेदुष्णेन तोयेन यवक्वाथेन वा पिबेत्
जयेत्सर्वाणि शूलानि गुल्मपार्श्वोदराणि च ॥२३३॥
गुडैरंडनिशादारुतिलाः सौवर्चलं पुरः
धूम्रो राजी कुसुंभं च लेपश्च सर्वशूलहा ॥२३४॥
वर्जयेद् द्विदलं शूली नवमन्नं च शीतलं
पिच्छलं दधि वर्ज्यं च दिवास्वापं वर्जयेत् ॥२३५॥

॥ अथ अरोचके ॥

षट्कटु सौवर्चलं च पथ्या द्राक्षा च दाडिमं
अजाजींद्रा गुडमधु गुण्यरोचकनाशनी ॥२३६॥
सिंही पलांडुः सूरणं शतपुष्पा काकमाचिका
व्यंजनं रोचकं प्रोक्तं गोधूमा वर्जरी हिता ॥२३७॥

॥ अथ तृष्णायां ॥

दुरालभा पर्पटकः प्रियंगुः
कोलेंद्रजं त्र्यूषणकं सकुष्ठं
क्वाथः स शीतो समधुः सिताढ्य-
स्तृष्णां त्रिदोषप्रभवां निहंति ॥२३८॥

अमृता पद्मकैरंडद्राक्षा मधुकचंदनं
वालकः शर्करायुक्तः क्वाथः पेयस्तृषापहः ॥२३९॥
दुरालभा वा त्रिफला क्वाथः पेयः सशर्करः
मधु वा शर्करायुक्तं तालुलेपात्तृषापहं ॥२४०॥

श्लो. २३४ पुरः गुग्लुः । धूम्रो-धूमसारः धुँस । २३६ षट्-कटु-इंद्रा इंद्रवारुणी मूलं । २३७ वर्जरी-वाजरो । २३८ कोलं बदरीफलं । इंद्रजं-इंद्रयवाः ।

कुष्ठ मुत्पलजा लाजा न्यग्रोधस्य प्ररोहकाः
मधुशर्करया गुटयो मुखे धार्यास्तृषापहा ॥२४१॥
रक्तशाल्योदनं शस्तं मधुशर्करयान्वितं
भोजनेषु प्रशस्तं च क्षारं कटुकवर्जितं ॥२४२॥
छर्द्यां तृष्णासु शोषे च भ्रमे पानात्ययेपि च
अतिसारे च ग्रीष्मे च दिवा निद्रा सुखावहा ॥२४३॥

॥ अथ अनिद्राहरणं ॥

यदा रात्रौ न निद्रा स्यात् तदा कुर्यादिमां क्रियां
काकमाच्यास्तु मूलं वा शिरोबद्धं भिषग्वरैः ॥२४४॥
सिंही व्याघ्री सिंहमुखी काकमाची पुनर्नवा
वृंताकानां च मूलानां क्वाथो निद्राकरो नृणां ॥२४५॥

॥ अथ मूर्च्छातंद्रासु ॥

शर्करेक्षुरसं द्राक्षा मध्वाज्यशीतलं जलं
एकैकं पानमात्रेण मूर्छातंद्रानिवारणं ॥२४६॥
तुरगलाला मरिचं सैंधवं मधुना सह
नेत्रांजनाद्धरेन्मूर्च्छां नीलं शिग्रुफलान्वितं ॥२४७॥
डंभयेत्तालुदेशे च वायुः कुर्यात्सुशीतलः
आंदोलनं तथा कार्यं शीतजलेन स्नापयेत् ॥२४८॥

॥ अथ दाहे ॥

कुशकासेक्षुमूलानां चोशीरं घनवालुकं
क्वाथः सशर्करः पीतो सर्वदाहं निवारयेत् ॥२४९॥
पर्पटोशीरघनामृता मध्वक्तः शर्करान्वितः
शीतः पीतो निहंत्याशु दाहं सर्वशरीरजं ॥२५०॥
कालेयकरसः पीतो देहे शस्तो विलेपने

श्लो. २४५ सिंही, बृहत्कंटकारी, व्याघ्री कंटकारी सिंह मुखी आटरूपको । २४७ नील नीलीमूलं । २४८ आंदोलनं-हिंडोलारोहणं तेन पवनसुखं । २५१ कालेयकं-अगरु ।

धात्रीफलं वा सितया जले पिष्टं प्रलेपने ॥२५१॥

॥ अथ अपस्मारे मृगीरोगे ॥

नस्यं पानांजनं लेपो मर्दनं दाहमेव च
अपस्मारे चोपचारे घृतं तैलं च धीमतां ॥२५२॥
अगस्तिपत्रं मरिचं मूत्रेण परिपेषितं
नस्ये शस्तमपस्मारे मृगकीटो विनश्यति ॥२५३॥
वंध्यांककेर्कोटकीमूलं घृतं शर्करयान्वितं
नस्यं श्रेष्ठमपस्मारे मृगीवातं निवारयेत् ॥२५४॥
खुरसाणीवचा पिष्टा दुग्धे कृत्वाथ भक्षयेत्
त्रिसप्तदिवसैर्हन्यादपस्मारं मृगीं तथा ॥२५५॥
त्र्यूषणं त्रिफला हिंगु सैंधवं कटुका वचा
नक्तमालकवीजानि तथा च गौरसर्षपाः ॥२५६॥
वस्तमूत्रेण पिष्टानि गुटी छाया विशोषिता
अंजनाद्धंत्यपस्मारं स्मृतिभ्रंशं तथैव च ॥२५७॥
ललाटे च भ्रुवोर्मध्ये दहेद्वा मूर्ध्नि मानवं
तेन शांतिर्मृगीरोगे अपस्मारेषु चेतनं ॥२५८॥
वर्जयेच्च मृगीरोगी कटुकाम्लं सुरां पुगीं
असाध्यो हि मृगीरोगो अपस्मारो हि मृत्युदः ।२५९।

॥ अथचित्तभ्रम वायुरोगे ॥

चित्तभ्रमे चोन्मादे वा ग्रथलो मानवो भवेत्
तत्रापस्मारकं कर्म कर्तव्यं भिषजा स्वयं ॥२६०॥
कल्याणकं तथा ब्राह्मीघृतं देयं सदा बुधैः
सर्वचेतोविकारेषु शमनं परमं मतं ॥२६१॥

॥ अथ अर्दित वायुरोगे ॥

मुखं नेत्रं तथा ग्रीवा अर्दिते वक्रतां व्रजेत्

श्लो. २६० ग्रथलः शुद्धिहीनः ।

पक्षघाते तथार्धांगे शून्यं च मृत्युकारकं ॥२६२॥
रसोनं पर्पटो वरी क्वाथो चार्दितनाशनः
वातारिर्विश्वा मगधा चाश्वगंधा हि वातहृत ॥२६३॥
मापा वला अश्वगंधा रास्नैरंड फलत्रिकं
क्वाथो चार्दितदोषेषु पेयो गुग्गुलुना हितः ॥२६४॥

॥ अथ जाडियावायु-धनुर्वायु रोगे ॥

घातितां मूतिकां हंति अम्लसेव्याद् द्विजग्रहः
तस्या धनुष्याकृतिश्च सप्ताहान्म्रियते ध्रुवं ॥२६५॥
शरीरं सर्जतैलेन त्रिमर्द्य भिषजांवरैः
दशमूलभवः क्वाथो नस्यं कटुष्णभेषजैः ॥२६६॥
पुनः कालारिपानं वो तैलं लविंगसंभवं
पानाल्लेपाद्धनुःशांतिर्मुक्तं स्याद् द्विजवंधनं ॥२६७॥

॥ अथ शीतांग वायुरोगे ॥

हिमं सर्वशरीरं च शीतवातस्य लक्षणं
तस्य कुवेरं कर्कोटी मर्दनं शीतनाशनं ॥२६८॥
रास्नाभूनिंव त्रायंती दशमूलं शठी तथा
दुःस्पर्शाक्वाथः पीतोयं शीतांगसमये ध्रुवं ॥२६९॥
कस्तूरीदेवकुसुमकुवेरार्द्रकजैः रसैः
पानं शीतांगरोगेषु तथा लसणसेवनं ॥२७०॥

॥ अथ आमवाते ॥

कट्यां व्यथा गुदे वंधः संधीषु श्वयथुर्भवेत्
उत्थाने न समर्थः स्यादामवातस्य लक्षणं ॥२७१॥

श्लो॰ २६५ घातितां प्रसव पीडितां । २६७ कालारिपानं कालारसपानं द्विज-दंत । २६८ कुवेरं यवानी । कर्कोटी कंकोडी । २६९ त्रायंती त्रायमाणा । दुःस्पर्शा-धन्वयासः । २७० कुवेरं-यवानी । लसणं रसोनं ।

पिबेदेरंडतैलं च गुडक्षीरेण संयुतं
सर्वांगोत्थामवाते च श्रेष्ठमेतद्विरेचनं ॥२७२॥
रास्ना गुडूची देवाह्वं वातारिः समहौषधः
पिबेदामे बंधकोष्ठे कटीशूले विशेषतः ॥२७३॥
वर्जयेद् द्विदलं गौडचं तैलमम्लं च पिच्छलं
शीतोदकेन स्नानं च आमवाते विवर्जयेत् ॥२७४॥

॥ अथ रांधणवायु-रांजणवायु अध्रसी वाते ॥

रक्तवातसमुद्भूतं जानुद्वये च रांधणं ॥२७५॥
जान्वोश्च जंघयोर्मध्ये जायते बहुवेदना
अस्मिंश्च रुधिरास्रावं तथा स्वेदं च कारयेत् ॥२७६॥
अभ्यंगो वातहृत् तैलं पानं रास्नादिपंचकं
पादरोगेषु सर्वेषु चांगुल्याश्चतुरंगुले ॥२७७॥
तिर्यग्दाहः प्रकुर्वीत पथ्यं यद्वातरोगिणां ॥२७८॥

॥ अथ संधिगतवायु रोगे ॥

हृदि प्राणो गुदेपानः समानो नाभिमंडले
उदानः कंठदेशे स्याद् व्यानः सर्वशरीरगः ॥२७९॥
संधिस्थाने भवेत्पीडा किंचिच्छोफश्च जायते
वायुं संधिकनामानं त्रिमासं स तु तिष्ठति ॥२८०॥
अतः प्रतिक्रियां वक्ष्ये येन सिध्यति मारुतः
स्नेहं निरूहणं पथ्यं पाचनं शमनानि च ॥२८१॥
स्वेदनं मर्दनाभ्यंगं वस्तिः स्नेहं रक्तमोक्षणं
रेचनं लंघनं चाथ कर्तव्यं वायुनाशनं ॥२८२॥
रास्ना गडूचिका दारु नागरैरंडगोक्षुरैः
क्वाथः सर्वांगवातेषु सप्तधातुगते हितः ॥२८३॥

श्लो. २७३ वातारिः एरंडः। २७४ गौडचं गुडविकृतिः। २७५ रांधण रांजणं अध्रसीवातः Sciatica।

॥ महारास्नादि क्वाथः ॥

रास्ना गडूची देवाह्वमेरंडमभया शठी
वलोग्रगंधा पाठा च शतपुष्पा पुनर्नवा ॥२८४॥
पंचमूली विषा मुंडी सहाचरो दुरालभा
यवानी पौष्करं मूलं वाजिगंधा प्रसारणी ॥२८५॥
गोक्षुरं आढरूपश्च हपुषा वृद्धदारुकं
शतावरी तथा ब्राह्मी गुग्गुलुः पिप्पलीयुतः ॥२८६॥
समभागैरिमैः सर्वैः कषायमुपकल्पयेत्
वातरोगेषु सर्वेषु महारास्नादिकः स्मृतः ॥२८७॥

॥ योगराज गुग्गुलुः ॥

चित्रकं पिप्पलीमूलं यवानी करकी तथा
विडंगान्यजमोदा च जीरकं सुरदारु च ॥२८८॥
चव्यैला सैंधवं कुष्टं रास्ना गोक्षुरधान्यकं
त्रिफला मुस्तकं व्योषं शिग्रूशीरयवाग्रजं ॥२८९॥
तालीसपत्रं पत्रं च सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत्
यावंत्येतानि चूर्णानि तावन्मात्रं तु गुग्गुलुं ॥२९०॥
विमर्द्य सर्पिषा गाढं स्निग्धभांडे विनिक्षिपेत्
अक्षमात्रं प्रयुंजितं यथेष्टाहारवानपि ॥२९१॥
योगराज इति ख्यातो योगोयममृतोपमः
अशीतिवातजान्हन्यात्प्रातर्नित्यं च भक्षयेत् ॥२९२॥
विश्वा च पिप्पलीमूलं शतावर्यश्वगंधिका
रास्ना वला तथा वोलः सितया मधुना सह॥२९३॥
अक्षमात्रा गुटी कार्या प्रातर्नित्यं च भक्षयेत्
हरते वातजान्रोगान् यथा सूर्योदये तमः ॥२९४॥
चोपचीनी सितायुक्ता चूर्णं नित्यं च भक्षयेत्

श्लो. २८४ उग्रगंधा-वचा । २८८ करकी-कर्णिकारः ।

हरते वातजान्रोगान्लवणं न तु भक्षयेत् ॥२९५॥

॥ नारायण तेल ॥

श्योनाकः पाटला विल्वं तर्कारी पारिभद्रकं
अश्वगंधा कंटकारी प्रसारणी पुनर्नवा ॥२९६॥
स्वदंष्ट्रातिबला चैव बला च समभागिका
पादशेषे जलद्रोणे क्वथितं स्नावयेत्ततः ॥२९७॥
ततश्चेतानि योज्यानि भेषजानि भिषग्वरैः
शतपुष्पा वचा मांसी दारु शैलेयकं वचा ॥२९८॥
पतंगं चंदनं कुष्ठं तथान्यद्रक्तचंदनं
करंजबीजं सुमतिस्त्रिसुगंधिः पुनर्नवा ॥२९९॥
रास्ना तुरंगगंधा च सैंधवं च दुरालभा
मंजिष्ठा सुरसा चैव प्रत्येकं तु पलद्वयं ॥३००॥
चूर्णं कृत्वा क्षिपेत्तत्र क्षिपेत् लाक्षारसाढकं
शतावरीरसं चैव अजाक्षीरं चतुर्गुणं ॥३०१॥
दधि तत्राढकं गव्यं तिलतैले प्रयोजयेत्
सिद्धं वह्नौ पुनः शीतं तैलं नारायणाभिधं ॥३०२॥
मर्दनान्नाशयेद्रोगांश्चतुरशीतिवायुजान्
तथा शतावरी तैलं विषगर्भं च वायुहृत् ॥३०३॥
लशुनं मधुना युक्तं तत्र युक्ता च मेथिका
पाको वा चाश्वगंधाया वातं हंति सुदुस्तरं ॥३०४॥

॥ अथ अम्लपित्ते ॥

भोजनांते भवेद्भ्रांतिश्चाम्लपित्तमुदाहृतं
उद्गारो जायते तस्य विरुद्धाहारतो भवेत् ॥३०५॥
भूनिंव निंब त्रिफला पटोला वासकामृताः

श्लो. २९६ तकारी । २९८ शलेयकं पाषाणभेद । सुमतिः सुरसा तुलसी ।

पर्पटो मधुसंयुक्तः क्वाथोम्लपित्तनाशनः ॥३०६॥
पारिभद्रदलानि स्युरामलक्या फलानि च
क्वाथ्यमानं प्रयुक्तत्र्यमम्लपित्तनिवारणं ॥३०७॥

॥ अथ विसर्प रोगे ॥

सर्वदेहे भवेच्चित्रं श्वेतं वा रक्तमंडलं
विसर्पं तं विजानीयात् सप्तधा परिकीर्तितं ॥३०८॥
चक्रमर्दः शिवा दुर्वा सैंधवं च हरीतकी
एषां समानकं चूर्णं तक्रकांजिकमर्दितं ॥३०९॥
विसर्पं हंति लेपेन रक्तमंडलकं तथा
क्षीरेण शीततोयेन धावनं हंति सर्पणं ॥३१०॥

॥ अथ व्रणरोगे ॥

व्रणाश्चानेकशः प्रोक्ता नानाधातुविकारजाः
तेषां निंबः सदा श्रेष्ठः पक्वापक्वव्रणेषु च ॥३११॥
अंकोलकं च लोद्रं च कदंबार्जुनवेतसाः
पारिभद्रदलानां च पिष्टं व्रणविलेपनं ॥३१२॥
चंदनस्य विलेपेन शतपत्राणि बंधने
धात्रीफलानि पिष्टानि लेपाद्व्रणविनाशनं ॥३१३॥

॥ अथ नाडीव्रणे ॥

अमृतापटोलीमूलं च त्रिकटु त्रिफला तथा
समभागं कृतं चूर्णं सर्वैस्तु गुग्गुलुः समः ॥३१४॥
प्रतिवासरमेकैकं खादेदक्षप्रमाणकं
नाडीव्रणसमुद्भूतरोगाणां शांतिकृत्सदा ॥३१५॥

॥ अथ विस्फोटके लेपः ॥

रक्तचंदनपर्पटी त्रिफलामूलकामृता
खदिरो वारिपिष्टानि विस्फोटघ्नं विलेपनम् ॥३१६॥

॥ अथ अग्निदग्धे ॥

निंवपत्राणि सुरसा कुष्टं धात्रीफलानि च
ईपद्दग्ध्वा कृतो लेपो दग्धपीडा निवारणः ॥३१७॥
अलसीतैल लेपेन दग्धपीडा निवारणं
सर्जमेरंडतैलेन लेपाद्दग्धनिवारणं ॥३१८॥

॥ अथ कर्णके ॥

कर्णमूले भवेद् ग्रन्थिः सा ग्रन्थिर्मृत्युकारका
जलौका मुच्यते तत्र डंभनं वा हितं भवेत् ॥३१९॥
कर्णमूले त्रयो ग्रन्थ्यश्छालिका कर्णपालिका
उपायेन च ते साध्ये निंवपत्रैश्च नाशयेत् ॥३२०॥

॥ कर्णकोत्पत्तिकारणं ॥

सुप्तेन जलपानेन कर्णको ग्रन्थि संज्ञितः ।
उत्पद्यते महाघोरः कर्णकः सन्निपातकः ॥३२१॥
त्रिदोषवत्सदा वैद्यैः क्रियते पथ्यभेपजं
गवां सर्पिस्तदा पानं कटुकाम्लं विवर्जयेत् ॥३२२॥

॥ अथ शस्त्रघाते ॥

आदौ च शस्त्रघाते च घृतेनोष्णेन सेचयेत्
पश्चाद्घातमुखे लेपः शस्त्रघातो न पच्यते ॥३२३॥
वाणपुंखाशिखा दंते चर्विता तद्रसो द्रुतं
पूरितो रोहितः सद्यो वचालेपोथ रोहकृत् ॥३२४॥
चर्वितो द्रुतपूर्णेन सहदेवीरसेन वा
श्वेतवस्त्रेण संवंधं नवघातस्तिरोहति ॥३२५॥
स्वल्पेपि शस्त्रघाते च सिंदूरोपि घृतप्लुतः
पाषाणोपि नसाणस्य प्रलेपो व्रणरोहकृत् ॥३२६॥

श्लो. ३१९ डंभनं अग्निकर्म डाम् । ३२६ नसाणस्य सराण-सज्ञं शस्त्रोत्तेजनपाषाणं शिलया संघृष्य लेपः ।

॥ अथ गंभीरव्रणं हैया होडी पाठु सप्तपुटं सत्पुडा चापटिका पांठुं ॥

बृहत् व्रणं तद् गंभीरं त्रिप्रकारं तदुच्यते
अस्थिमांसशिराप्राप्तं स्थाने नाम पृथक् पृथक् ॥३२७॥
हस्तमध्ये सप्तपुटं हृदये हृदि होडिका
पृष्ठे चोपटिका ज्ञेया स्थाने नाम परीक्षयेत् ॥३२८॥
कुमारीनिंवपत्रेण प्रथमं पाचयेद् व्रणं
पश्चात्स्फोटनकं कुर्यात् डंभनं शोधनं तथा ॥३२९॥
कृशदुर्बलभीरूणां नाडिमर्माश्रिताश्च ये
क्षारसूत्रेण तांश्छिंद्यान्न शस्त्रेण कदाचन ॥३३०॥
धावनं शांतिकरणं व्रणानां क्रियते बुधैः
डंभनं सर्वतो व्रणे श्रेष्ठं प्रोक्तं महर्षिभिः ॥३३१॥
व्रणमध्ये यदा जंतुस्तत्र धूम्रं च दापयेत्
व्रणमध्ये महच्छिद्रं वर्तिं तत्र प्रदापयेत् ॥३३२॥
करंज धत्र निंवानां कदंवार्जुनवेतसात्
पादावशेषक्वाथेन गंभीरव्रणधावनं ॥३३३॥
निंवरसं मधुयुक्तं चाग्निना प्रतिकारयेत्
व्रणमध्ये क्षेपनीया सा वर्तिः सुखकारका ॥३३४॥
कुक्कुटांडखंडयुक्तहंसपाकस्य धूमतः
व्रणे जंतून्निहंत्याशु चार्कपुष्पेण धूपितं ॥३३५॥
सिंदूरं हिंगुलं सर्जं वोदारं हीरदक्षिणं

श्लो. ३२७ हस्तमध्ये सप्तपुटं नामगंभीरं व्रणं जायते 'सातपडो' इति कथ्यते। हृदि जातं गंभीरव्रणं हृदि होडिका –"हैया होडी" इति कथ्यते। पृष्ठस्थं गंभीरव्रणं चोपटिका 'पाठुं' इति कथ्यते इदं बहुधा मधुमेहिनां भवति कष्टसाध्यं क्वचिदसाध्यमपि। ३३५ कुक्कुटांडखंडः अंडावरणं 'इंडानां काचलां'। हंसपाकः हिंगूलः। ३३६ हीरदक्षिणं–हीरादखण इति प्रसिद्धं द्रव्यं। मीणेन मधूच्छिष्टेन।

मनुष्यास्थि भस्मकं च घृतं मीणेन संयुतं ॥३३६॥
श्वेतवस्त्रेण तं लेपं व्रणोपरि च दापयेत्
असाध्यं तदतिच्छिद्रं यथा सूत्रघृतान्वितं ॥३३७॥

॥ अथ चिपिका स्फोटिका झर्मरीका कुक्षिका झामरी-
कखवीपियो-फटकियो ॥

झर्मरीको कुक्षिका च स्फोटिका चिपिका स्मृताः
श्वेतव्रणो व्रणः किंचित् सद्योव्रणः स उच्यते ॥३३८॥
झर्मरीके डंभनं कुर्यान्सेचनादैश्च लेपयेत्
तैलं वाम्लं तथा हिंगु वर्जयेच्च सदा बुधः ॥३३९॥
पारदं गंधकं नीली घृतयुक्तं च लेपयेत्
कुक्षिकां स्फोटिकां चीपीं सद्यो नाशयति ध्रुवम्॥३४०॥

॥ अथ नासुरे ॥

महिषीशृंगं दग्धं च घृतयुक्तं च लेपयेत्
मानुषास्थ्नां घृते लेपो नासुरं नाशयेद् ध्रुवं ॥३४१॥

॥ अथ वाले-स्नायु रोगे ॥

छिपीभस्म दधियुतं पानाद्वालकनाशनम्
किंशुकं गुडसंयुक्तं वालकं हंति सप्तशः ॥३४२॥

॥ अथ श्लीपदे वल्मिके राफी कोटिकानगरे ॥
कीडियानगर रोगे ॥

पादात्तले भवेद् व्याधिः श्लीपदं वल्मिकं तथा
श्लीपदं रक्तभेदी च वल्मिकं मेदसा स्मृतं ॥३४३॥
क्षारसूरणकं पिष्ट्वा मधुना सह लेपयेत्
सहस्रमूलीमूलं च मधुयुक्तं च लेपयेत् ॥३४४॥

श्लो. ३३८ झर्मरी-' झामरी-झामरो ' । ३४२ छिपीभस्म जलशुक्ति भस्म 'नदीनो छिपनीयुं' इति काठीआवाडे । किंशुकं पलाशपुष्पं ।

तैलमेरंडजं वापि श्लीपदं हंति सत्वरं
वल्मिकं कीटनगरं एतल्लेपाद्विनश्यति ॥३४५॥

॥ अथ अर्बुदे-रसोली रोगे ॥

अर्बुदं च महत्स्थूलं यत्र तत्र तु जायते
रसोलिका च सा ज्ञेया रक्तमार्गं च रुध्यते ॥३४६॥
तस्यादौ स्फोटनं कार्यं मर्मस्थानं च वर्जयेत्
सैंधवेन घृतेनापि कुर्यात्तस्यानुलेपनं ॥३४७॥
सूरणं कंदकं दग्ध्वा घृतेन च गुडेन वा
सविडंगं जवक्षारो शुंठी गंधं च लेपयेत् ॥३४८॥
शेषा व्रणक्रिया कार्या तथा चार्बुदशांतये
वातघ्नानि च पथ्यानि हितानि मधुराणि च ॥३४९॥

॥ अथ कंठमाला गंडमाला गलगंडः ॥

कंठदेशे भवेद् ग्रन्थ्यो मालावज्जंतुसंयुता
सर्षपः शीग्रुवीजानि शणवीजातसीयवाः ॥३५०॥
मूलकस्य च वीजानि तक्रेणाम्लेन लेपयेत्
गृहधूमं कृष्णजीरं गोमूत्रेण च लेपयेत् ॥३५१॥
गंडमालां च लूतां च हंति शीघ्रं च कीटकान्
कटुतैलान्वितैर्लेपात् सर्पकंचुकिभस्मना ॥३५२॥

॥ अथ लूता ॥

लूतामध्ये भवेज्जंतुर्नखरोमाणि नाशयेत्
लूतानि सर्वगात्राणि तेन लूता प्रकीर्तिता ॥३५३॥
अंकोलकस्य मूलानि पारिभद्रदलानि च
गोमूत्रेण कृतो लेपो लूताजंतुनिवारणः ॥३५४॥

श्लो. ३४५ कीटनगरं-किडियानगरं वल्मिकभेदः श्लीपद भेदः । ३४८ गंधं गंधकं । ३५१ कृष्णजीरं-तिक्तजीरकं-कालोजीरी । पारिभद्रः आम्रः

हिंगु कुक्कुटविष्ठा च कर्णिका रेणुसंयुता
मधुयुक्तः कृतो लेपो लूताजंतुनिवारणः ॥३५५॥
अगस्तिपत्रनिर्यासो लेपो लूतानिवारणः
वर्जयेत् शीतवीर्याणि तीक्ष्णवीर्याणि वर्जयेत् ॥३५६॥

॥ अथ भगंदरे ॥

वृषणासनयोर्मध्ये भगस्थानं तदुच्यते
एतत्स्थाने भवेच्छिद्रं भगंदरमिति स्मृतं ॥३५७॥
असाध्यो हि स रोगोस्ति कष्टसाध्यः कदाचन
जलौकां मोचयेदादौ पश्चाद् भेषजमाचरेत् ॥३५८॥
कोलारग्वधरजनी चूर्णं मधुघृताप्लुतं
अग्रैर्वर्तिः प्रणिहिता व्रणानां शोधने हिता ॥३५९॥
दंतीवह्निनिशालेपो भगंदरविनाशकृत्
त्रिफलावारिणा पीतो गुग्गुलुर्वा प्रयत्नतः ॥३६०॥
श्वानास्थिभूलताचूर्णं तक्रं राशभशोणितं
एतल्लेपाच्छमं याति कुपितोपि भगंदरः ॥३६१॥
पुष्टांगना तथा युद्धं व्यायामो गुरुसेवनं
रूढे व्रणे प्रयत्नेन त्यजेत्संवत्सरं नरः ॥३६२॥

॥ अथ विद्रधि रोगे ॥

अंडवृद्धिर्भवेद्यस्य तस्य विद्रधिर्जायते
मृदुविरेचनं कार्यं जलौकां मोचयेद् भिषक् ॥३६३॥
दुग्धमेरंडतैलेन विद्रधौ मिश्रितं हितं
कुंदरुः पिप्पली पथ्या दापयेच्छर्करायुतं ॥३६४॥
निहंति विद्रधेः शोफं दापयेल्लघुभोजनं

श्लो. ३५५ कर्णिका कर्णिकारः । ३६१ भूलता भूनागसंज्ञका जीवाः । राशभः गर्दभः । ३६४ कुंदरुः तन्नामकनिर्यासः शेषगुंदरः । ३६५ विद्रधि रोगे पादांगुष्ठयोर्मूलभागे तिर्यक् प्रकारेण डंभनं अग्निकर्म-डाम संज्ञकं ।

विलोमं पादांगुष्ठं च मूले च तिर्यक् डंभनं ॥३६५॥

॥ अथ उपदंशे विस्फोटके ॥

निंबामृताब्दकटुकी वृषधन्वयासो
भूनिंबपर्पटपटोलफलत्रिकाणां ॥
क्वाथो नृणामिह हितोस्त्युपदंशरोगे
विस्फोटके रुधिरदूषितदेहभागे ॥३६६॥

सूतं लवंगं कर्पूरं जातीपत्रं फलं त्रुटी
कवाबो पिप्पलीमूलं पत्रं चैव शतावरी ॥३६७॥
मस्तकी चाश्वगंधा च विडंगं वृद्धदारुकं
एतच्चूर्णं समांशं च सूतार्धमहिफेनकं ॥३६८॥
गुडेन गुटिका कार्या मर्दयित्वा विचक्षणैः
गुटी विस्फोटकान्हंति सर्वसंधिरुजापहा ॥३६९॥
मासार्धं भक्ष्यमाणास्तु शर्करा चानुपानकं
पयसा चोदनं भाज्यं जीर्णगोधूमभोजनं ॥३७०॥
पटिकां मंडलं हंति विस्फोटं संधिवातहृत्
खादिरं सारं भक्ष्यं तु शीतमन्नं तिलं त्यजेत् ॥३७१॥
त्रिफलाया कषायेण भृंगराजरसेन वा
व्रणप्रक्षालनं कुर्यादुपदंशप्रशांतये ॥३७२॥
कंपिल्लो दारशृंगश्च सिंदूरश्चाश्वगंधिका
घृतमाक्षिकयोश्चैव लेपो दुष्टव्रणाञ्जयेत् ॥३७३॥
निंबपत्रं धात्रिमिश्रं घृतयुक्तं च लेपयेत्
पथ्या रसांजनं वारि लेपाल्लिंगव्रणं हरेत् ॥३७४॥
अंबजंबुकरंजाश्च शमीदूर्वा च वञ्जुलः
एकैकं वारिणा पिष्ट्वा लेपो लिंगार्तिनाशनः ॥३७५॥

श्लो. जातीपत्रं-जातीपत्री । ३६८ मस्तकी-रुमीमस्तकी । ३७१ पटिकां-लघु स्फोटिकान । ३७३ दारशृंग-बोदारः । ३७४ धात्रिमिश्रं आमलकी मिश्रं । ३७५ अंब-आम्र ।

॥ अथ शीतळारोगे ॥

मधु वा वारिणा युक्तं पीतं दाहनिवारणं
नीलिका च घृते लेपाच्छीतलादाहनाशनः ॥३७६॥

॥ अथ उरुस्थंभे ॥

वायु रुधिरयोगेन जंघायां जायते ध्रुवं
उरुस्तंभः स विज्ञेयस्तत्र दाहरुजे भवेत् ॥३७७॥
पिप्पली पिप्पलीमूलं भल्लातकफलानि च
कल्को मधुयुतो भुक्त उरुस्तंभं निवारयेत् ॥३७८॥
पिप्पली पिप्पलीमूलं मूलमेरंडसंभवं
क्वाथोयं मधुना पीत उरुस्तंभं निवारयेत् ॥३७९॥

॥ अथ विचर्चिका वर्चला ॥

सूक्ष्मं तिलोपमं देहे रक्तं श्वेतं च कृष्णकं
चिन्हं विचार्चिका नाम वर्चलापि च सा स्मृता॥३८०॥
त्रिकटु सयवं सूर्वां तालकं समभागतः
गोमूत्रेण समं पिष्टं हंति लेपाद्विचर्चिकां ॥३८१॥
भल्लातकगोमूत्रक्वथितं सयवं समं
चिरकालोद्भवं हंति लेपतो वा विचर्चिकां ॥३८२॥

॥ अथ आनाह रोगे ॥

मातुलुंगार्द्रकरसो हिंगुसौवर्चलान्वितः
शूलानाहविबंधेषु सहिंगु विडसंभवं ॥३८३॥
त्रिवृद्गीनकीदंत्यामाः स्नुहीक्षीरेण भावयेत्
गुटिका मूत्रसंयुक्ता श्रेष्ठा चानाहभेदिनी ॥३८४॥

॥ अथ मसूरा तथा मुहासा रोगे ॥

नासौ दाहो भ्रमो मोहोऽप्यतिसारो वमिस्तृषा

श्लो. ३८० [illegible] इति प्राकृतभाषायां [illegible]
नामा । ३८४ [illegible] ।

अनिद्रा च मुखं रक्तं तालु जिव्हा च शुष्यति ।३८५।
ग्रीष्मामध्ये च दृश्यंते स्फोटका सर्षपोपमाः
नाभिपार्श्वे भवेद् ग्रन्थिः सर्वैर्मधुर उच्यते ॥३८६॥
चंदनं यष्टिमधुकं वालकं निंबपपटे
मुस्ताशुंठीकृतः क्वाथो मधुरं हंति पित्तकं ॥३८७॥

॥ अथ मेद्रो रोगे ॥

मेदोवृद्धौ स्थूलदेहो जायते बलवर्जितः
तस्य मधुयुतं वारि सेवितं स्थौल्यनाशनं ॥३८८॥
व्योषाग्निमंथत्रिफला विडंगं गुग्गुलुं पिबेत्
हंति स्थौल्यं च मेदस्य चोष्णमन्नं च दापयेत् ।३८९।

॥ अंत्रवायुरोगे ॥

पादपृष्ठे आंत्रवायुर्जायते वायुयोगतः
तस्य वै डंभनं तत्र जलौका तस्य मुच्यते ॥३९०॥

॥ अथ कामवृद्धिकरणे ॥

द्विटंकमुचटा ज्ञेया पंच टंकं च मर्कटी
षट् टंकं मुशलीकंदं शर्करा सर्वसंमिता ॥३९१॥
अक्षमात्रां गुटीं कुर्यान्मधुना तां च भक्षयेत्
वर्धते कामवाणश्च यथारुष्करतैलतः ॥३९२॥
अश्वगंधा वचा कुष्ठं कृष्णा च गजपिप्पली
महिषीनवनीतेन लेपाल्लिंगं हि चोच्छ्रितं ॥३९३॥

॥ अथ उदावर्ते ॥

उदावर्ते गुदरोगो तस्य वर्तिं तु दापयेत्
हरीतकी जवक्षारो घृतयुक्तं तु भक्षयेत् ॥३९४॥
हिंगुमाक्षिकसिंधूत्थपक्वां वर्तिं तु कारयेत्

श्लो॰ ३९१ मर्कटी क्रौंचवीजं-कौवच कौचां । ३९२ आरु-ष्करं भल्लातकं । ३९५ माक्षिकं-मधु ॥

घृताभ्यक्तां गुदे दद्यादुदावर्तविनाशनं ॥३९५॥

॥ अथ व्यंगे मुखच्छायायां ॥

मुखे गले कृष्णछाया व्यंगं तन्नाम चोच्यते
दुग्धं कृष्णतिलान् पिष्ट्वा लेपाच्छाया विनाशनं।३९६।
जातीफलं चामलकं जले पिष्ट्वा च लेपयेत्
कोलबीजं मधुलेपात् मुखच्छायानिवारणं ॥३९७॥

॥ अथ मुख खिल्लकरवलारोगे. ॥

लोद्रोग्राधनिकाः पिष्ट्वा मुखे लेपाच्च खिल्लहृत्
मस्तके कुक्कुट शकृत् मूत्रलेपाच्च शांतिकृत् ॥३९८॥

॥ अथ शिरोरोगे ॥

अतिभारात् क्रिमिरोगैस्तीक्ष्णोष्णतिक्तभक्षणैः
विनाभ्यंगेन वा शैत्यात् पित्ताद्वा आम्लभक्षणात्।३९९।
अतिलेख्याद् दूरदृष्ट्या सूक्ष्मवस्तुनिरीक्षणात्
प्रहारात् क्रोधयोगेन जायते च शिरोव्यथा ॥४००॥
तद्रोगे भोजनं दद्याद् गोधूमं घृतशर्करा
शालिर्मुद्गं गवां दुग्धं शुंठीपाकः शुभः स्मृतः ॥४०१॥
देवदारु नतं कुष्ठं विश्वैरंडं च लेपतः
शिरःपीडां हरेत्सद्यो ज्येष्ठीमधुकचंदनैः ॥४०२॥
निंवपत्रं च तर्कारिः क्वाथबाष्पं जले कृतं
हरते मस्तके पीडामेरंडपत्रबाष्पतः ॥४०३॥
गुडेन नागरं नस्यं जले पथ्या गुडेन वा
गुडे शोभांजनं नस्यं शिरःपीडां हरेद् ध्रुवं ॥४०४॥
कुंकुमं तवराजं च विडंगं वा मनःशिला
घृतेन नस्यं देयं च शिरःपीडां निवारयेत् ॥४०५॥

श्लो॰ ३९७ कोलबीजं-बदरीफलास्थिमज्जा । ४०२ तर्कारिः अग्निमंथः । ४०५ कुंकुमं केसरं ।

॥ षड्बिंदु तैलं ॥

एरंडमूलं तगरं शताव्हा
जयंति रास्ना सह सैंधवं च
भृंगं विडंगं मधु जेष्टिका च
विश्वौषधं कृष्णतिलस्य तैलं ॥४०६॥
अजापयस्तैलविमिश्रितं च
चतुर्गुणैर्भृंगरसैस्तु पक्वं ॥
षड्बिंदवो नासिकया प्रदेयाः
सर्वांश्चहन्याच्छिरसो विकारान् ॥४०७॥

त्रिकटु पौष्करं रात्री रास्ना च सुरदारु च
क्वाथः शिरोतिजालं हि निशापीतो निकृन्तति ॥४०८॥
मरिचं मधुकं श्याममूलं कुंकुमत्वालकं
द्राक्षा विश्वा धान्यकानि तवराजं नागकेसरं ॥४०९॥
चूर्णितं क्षीरमध्वाज्यैर्निपीतं याति वेगतः
शिरःपीडार्धजा पीडा गुंजामूलस्य नस्यतः ॥४१०॥

॥ अथ भ्रूरोगे ॥

तांबूलपत्रस्वरसो विडंगं
सिंधूद्भवं हिंगु गुडेन युक्तं ॥
जलेन पिष्टं विनिहंति नस्यं
भ्रूशंखदोषं क्रिमिजे निहंति ॥४११॥

रक्तकणवीरपत्ररसः शर्करयान्वितः
नस्यं प्रभातसमये चार्धशीर्षव्यथां हरेत् ॥४१२॥

॥ अथ नासारोगे ॥

नासारोगस्त्रिधा प्रोक्तः क्रिमिजो रक्तसंभवः
तृतीयः पीनसो रोगो वातपित्तकफोद्भवः ॥४१३॥

श्लो. ४०८ रात्रिः–हरिद्रा । ४०९ श्याममूलं–कपूरीमधुरीमूलं । तवराजं तवर्थीरो ।

विडंगं हिंगु कर्पूरं नस्ये क्रिमिजदोपहृत्
दुर्वाया दाडिमरसो नस्यं क्रिमिजदोपहृत् ॥४१४॥
पाठा द्वे च निशे मूर्वापिप्पलीजातिपत्रकैः
हंत्याशु तैलसंसिद्धं नस्यं स्याद् दुष्टपीनसे ॥४१५॥
त्रिफलापिप्पलीचूर्णं मधुना सह भक्षयेत्
कुलिंजं त्रिगडूयुक्तं लीढं पीनसनाशनं ॥४१६॥
मरिचं गुडसंमिश्रं दधि पानेन नश्यति
पीनसं मापगोधूमभोजनादेव नश्यति ॥४१७॥
शय्यारूढो जलं शीतं निद्राकाले तु यः पिबेत्
तस्य पीनसजो दोपः शमं याति दिनत्रयात् ॥४१८॥

॥ अथ केश रोगे ॥

आरनालं चक्रमर्दतंडूलजलमर्दितं
मस्तके कुरुते लेपः शक्रलुप्तो विनश्यति ॥४१९॥
गुंजामूलं फलं गुंजा भल्लातं बृहतीफलं
मधुयुक्तः कृतो लेपः शक्रलुप्तं विनश्यति ॥४२०॥
भंगराजरसेनैव लोहकिट्टं फलत्रिकं
निंबबीजं तिलात्तैलं पक्वं च मस्तके क्षिपेत् ॥४२१॥
अकालपलितं कंडुमिंद्रलुप्त च नाशयेत्
बद्धमूला घना दार्घाः कृष्णाः केशा भवंति हि ॥४२२॥

॥ अथ कर्णरोगे ॥

व्रणे वाते जले पूर्णे शल्ये कृमिभवे तथा
कंडूयनं कर्णरोगे जायते चाम्लसेवनात् ॥४२३॥
बस्तमूत्रं क्षिपेत् कोष्णं सैंधवेन समन्वितं
सैंधवं चोदधेःफेनं तैलेन कर्णरोगहृत् ॥४२४॥

—श्लो. ४१५ जातिपत्रकैः जातिनामक सुगंधी पुष्पलताया पत्रैः। ४१६ कुलिंजं कुलिञ्जनं। त्रिगडू-त्रिकटु। ४१९ शक्रलुप्तः इंद्रलुप्तः।

लशूनं भानुपत्राणि वह्नौ तप्तानि मर्दयेत्
तद्रसो कर्णपूरेण कर्णशूलं विनाशयेत् ॥४२५॥
शुक्ती राजी चार्कमूलं गृहधूमं तक्रमर्दितं
तद्रसो कर्णनिक्षिप्तः कर्णबाधिर्यनाशनः ॥४२६॥

॥ अथ ओष्टपाके ॥

ओष्टस्फोटो भवेद्यस्य गैरिकांभो घृतं मृषेत्
आम्रपत्रं घृते पिष्टं मृक्षणादोष्टदोषहृत् ॥४२७॥

॥ अथ दंतरोगे ॥

कुष्टं दार्वी च मंजिष्ठा त्रिफलातिक्तलोद्रकं
निशा पाठा तेजनी च घर्षणं दंतरोगहृत् ॥४२८॥
आढरूपकसेरोर्वा रसः कर्णे च पूरितः
दंतपीडा प्रशाम्येत विडंगं सिंधु घर्षणात् ॥४२९॥

॥ अथ जिव्हा पाके ॥

जिव्हायां पिटिका यस्य जिव्हापाकं विनिर्दिशेत्
खादिरं च त्रुटीचूर्णं कवाचा तत्र धारयेत् ॥४३०॥
वालकं पद्मकं श्यामा वर्वरं शतपत्रिका
एतल्लेपेन शाम्यंति स्फोटका रसनोद्भवा ॥४३१॥

॥ अथ घंटिका रोगे जिव्हामूलसंभवे ॥

जिव्हामूले घंटसिद्धौ श्लेष्मरक्तोत्थग्रन्थिका
वचा समरिचा कृष्णा चूर्णं तत्र निधापयेत् ॥४३२॥
धान्यं नागरजीमूतत्वचा उग्रा समांशकं
क्वाथो हरेद् घंटिकाया रोगं गंडूषधारणात् ॥४३३॥

श्लो. मृ४२७ षेत् मर्दयेत् । ४२८ तिक्तलोद्रकं तिक्तं तिक्ता कटुकी लोद्रकं च । तेजनी तेजबल्ल इति प्रसिद्धं । ४३० त्रुटी एला । ४३१ श्यामा-प्रियंगुः । वर्वरं बब्बूलपत्रं । ४३३ जीमूतं -मुस्ता । उग्रा वचा घोडावज इति ।

तेजोवती जवक्षारो दारु कृष्णा रसांजनं
निशा पाठा मधुयुता गुटी तेषां च कारयेत् ॥४३४॥
मुखे च धार्यते नित्यं घंटिकारोगनाशनी
मर्दनं स्यात्कंठदेशे तेन ग्रन्थिर्विलीयते ॥४३५॥

॥ अथ गलशुंडिका रोगे ॥

घंटिकाया अर्धमार्गे लंबिका ग्रन्थिरुद्भवेत्
असाध्या सा हि विज्ञेया मर्दनं तत्र कारयेत् ॥४३६॥
दिवारात्रौ यत्नान्याश्च मुखे संधारणं हितं
मंजिष्ठा च निशा मुस्ता पीतः क्वाथो गलामये ४३७
सिद्धार्थको वचा कुष्ठं रजनी पारिभद्रकं
गृहधूमं सलवणं कंठे वा लेपने हितं ॥४३८॥
ज्वरे प्रोक्तानि पथ्यानि यानि तानि च दापयेत्
न गौल्यं पिच्छलं सेव्यं तैलं नैव गलामये ॥४३९॥

॥ अथ मुखरक्ते ॥

पिष्ट्वा तंडूलतोयेन कुस्तुंबरु शिलाभिदं
स्तंभयेत्पतितं रक्तं प्रातः पीतोतिवेगतः ॥४४०॥

॥ अथ स्वरोपघाते ॥

कृष्णा विभीतकं विश्वा लवंगं लवणोत्तमं
नागवल्या दलरसे गुटी धार्या निशामुखे ॥४४१॥
जातिपत्रं कणा लाजा मातुलिंगदलं मधु
एतल्लेहाद् भवेन्नादः किन्नरस्वरतोधिकः ॥४४२॥

॥ अथ मुखपाके ॥

जातिपत्रामृताद्राक्षा देवदारु फलत्रिकं
क्वाथः क्षुद्रयुतः सिद्धो मुखस्थो मुखपाकजित् ॥४४३॥

श्लो. ४३४ तेजोवती-तेजवलं । ४३८ पारिपद्रकं आम्रपल्लवाः । ४३९ गौल्यं गुडविकृतिः । ४४१ लवणोत्तमं सैंधवं ।

॥ अथ मुखशोषे ॥

कुष्ठं कासोद्भवं मूलं मधूकं पिष्टमंभसा
मधुयुक्तं पिबेद्धंति पिपासां चिरकालजां ॥४४४॥
जलं मलयजं रक्तं चंदनं मधुकं समं
उशीरेणान्वितो लेपो मस्तके तृण्निवारणः ॥४४५॥

॥ अथ नेत्ररोगे ॥

उष्णातिक्षारकटुकैरभिघातैः सूक्ष्मेक्षणात्
वातपित्तकफोद्भूताः सहजाश्च तथापराः ॥४४६॥
जायंते नेत्रजा रोगा षट्सप्ततिकसंख्यकाः
धूम्रं नवान्नं रूक्षं च मैथुनं चाम्लवर्जनं ॥४४७॥

॥ चंद्रोदया वर्तिः ॥

हरीतकी वचा कुष्ठं पिप्पली मरिचानि च
विभीतकस्य बीजानि शंखनाभिर्मनःशिला: ॥४४८॥
सर्वमेतत्समं कृत्वा छागीक्षीरेण पेषयेत्
वर्तिश्चंद्रोदया नाम्नी अंजयेन्नयने निशि ॥४४९॥
नाशयेत्तिमिरं कंडूं पटलं चार्बुदानि च
पुष्पं निशांधतां चार्मं व्याख्याता नेत्ररोगजित् ॥४५०॥
शुक्रं च शमयेत्सद्यो माक्षिको माक्षिकैर्युतः
त्रिफलाया जलं नेत्रे प्रक्षालनं पुनः पुनः ॥४५१॥
गौशकृतो रसे पिष्ट्वा पिप्पलीमूलमंजनात्
निशांध्यं नश्यते क्षिप्रं मालतीनिंबपल्लवैः ॥४५२॥
अमृताया रसे घृष्टं सिंधवं मधुना सह
हरते नेत्रजान् रोगान् षट्सप्ततिकसंज्ञकान् ॥४५३॥
त्रिफला भृंगराट् शुंठी दधि मधुकसर्पिषा
गौमूत्रेण सनागं च अंजनान्नेत्ररोगहृत् ॥४५४॥

श्लो. ४४४ कासोद्भवं-कासमूलं । ४५१ माक्षिकः सुवर्ण माक्षिकः ।

खर्परं फटकी तुत्थं समांशं सर्वयोजितं
सिता सर्वद्विगुणिता गुटी गोदुग्धतश्चरेत् ॥४५५॥
अंजनाद्धरते पुष्पं छायांध्यं च तथार्मकं
पटलं शस्त्रछेदेन सिद्धयति न तथौषधैः ॥४५६॥

॥ अथ बालक रोगे ॥

शृंगी चातिविषा कृष्णा नागराघनपुष्करं
घर्षणं शिशवे देयं क्षीरदोषनिवारणं ॥४५७॥
किरातं मधुसंयुक्तं घर्षणं ज्वरनाशनं
शृंगा भांर्गी मधुयुतं बालानां कासनाशनं ॥४५८॥
शिलाभेदं सितायुक्तं मूत्ररोधं निवारयेत्
हरीतकी गुडयुता विड्बंधं च निवारयेत् ॥४५९॥
बिल्वं जातीफलं पानादतिसारं निवारयेत्
वचा पाने भवेद्वाचा अपस्मारं निवारयेत् ॥४६०॥
लोद्रं रसोजनं धात्री गैरिकं मधुना सह
अंजनेनैव बालानां नेत्ररोगनिवारणं ॥४६१॥
लाजा च धातकीपूष्पं बालानां वांतिनाशनं
लवंगं खादिरं सारं बालानां श्वासनाशनं ॥४६२॥
गैरिकं राजिका धूम्रं गवां तक्रेण लेपयेत्
पामा विचर्चिका सिध्मं बालानां हंति सत्वरं ।४६३।

॥ अथ शारीर चिकित्सा ॥

देशकालवयोवह्निसात्म्यं प्रकृतिभेषजं
एवं सत्वं बलव्याधीन्ज्ञात्वा कर्म समारभेत् ॥४६४॥
देशस्तु त्रिविधो ज्ञेय आनूपो जांगलस्तथा
साधारणो विशेषेण ज्ञातव्यः स मनीषिभिः ॥४६५॥
कालस्तु त्रिविधो ज्ञेयो अतीतोनागतस्तथा

श्लो. ४६६ अनागतः भविष्यत्कालः। संधिकाः। संध्याकालः।

वर्तमानः पुनस्त्रीणि प्रातर्मध्याह्नसंधिकाः ॥४६६॥
तथा वर्षादि शीतोष्णास्त्रयः काला इमे मताः
अन्ये षड्ऋतवः काला वर्षादीनामनुक्रमात् ॥४६७॥
हैमंतवर्षाशिशिरेषु वायुः
पित्तं च ग्रीष्मे च घनात्यये च
कफप्रकोपं कुसुमागमे च
कुर्वीत यत्नं विधिवद् विधिज्ञः ॥४६८॥
वयश्च त्रिविधं प्रोक्तमुत्तमं मध्यमाधमे
बाल्ययौवनवार्धक्यं कथितं शास्त्रकोविदैः ॥४६९॥
प्रकृतिस्तुर्यधा ज्ञेया वक्ष्यामि किल शास्त्रतः
वातिका पैतिका चैव श्लेष्मिका सान्निपातिकी॥४७०॥
वातिके कृष्णवर्णं च रक्तदेहश्च पैतिके
श्लैष्मिके गौरवर्णं च श्वेतं च सन्निपातिके ॥४७१॥
आदौ रोगोत्पत्तिस्थानं यद्वस्तु चापि जायते
तद्वै विवरणं नाम आदानं प्रोच्यते बुधैः ॥४७२॥
साध्यासाध्यकृच्छ्रसाध्यं त्रिविधो रोग उच्यते
स्थितिर्लक्षणं रोगस्य ज्ञायते तन्निदानतः ॥४७३॥
शल्यं शालाक्यं काये स्यात् तथा बालचिकित्सितं
अगदे विषतंत्रं च भूतविद्या रसायनं ॥४७४॥
वाजीकरणमेवेति चिकित्साष्टकमेव च
शस्त्रेण क्रियते कार्यं तच्छल्यं कथितं बुधैः ॥४७५॥
शिरोरोगश्च शालाक्यं देहरोगश्च कामजः
अगदं गुदरोगं च गर्भादि बालरोगकं ॥४७६॥
ग्रहादिपीडनं भूतं जंगमं स्थावरं विषं
रसायनं सुवर्णादि वाजिनं शुक्रवर्धनं ॥४७७॥

श्लो· ४७० तुर्यधाः चतुर्विधा ।

नाडी मूत्रं मलं जिव्हा मुखं नेत्रं स्वरं वलं
तद् दृष्ट्वा ज्ञायते रोगं निदानमपृथ। स्मृतं ॥४७८॥
वमनं रेचनं नस्यं लंघनं वस्तिकर्मणि
आदौ रोगे पंचकर्म पश्चादौषधं दापयेत् ॥४७९॥
वमनं हृदये रोगे विरेकश्चोदरे तथा
लंघनं मलरोगस्य नस्यं च मस्तके गदे ॥४८०॥
गुदरोगे वस्तिकर्म कर्तव्यं च भिषग्वरैः
त्वचाया रुधिरस्रावो जलौकादिकमोचनात् ॥४८१॥
रोगसाध्यं च विज्ञेयं औषधानां गुणागुणौ
कषायो गुटिका चूर्णं तैलं घृतं च योजयेत् ॥४८२॥
घृतं तैलं च पानीयं कषायं व्यंजनादिकं
पक्वशीतं पुनस्तप्तं सर्वं तच्च विषोपमं ॥४८३॥
पाचने पच्यते दोषा शोधने मलशो द्रवेत्
शमने रोगशांतेः कृत् पथ्ये चायुश्च वर्धते ॥४८४॥
अन्नं जलं व्यंजनं च शय्या वायुस्तथैव च
रोगिणां च सदा पथ्यं देयं रोगानुसारतः ॥४८५॥
धर्मार्थकाममोक्षार्थं शरीरं साधनं यतः
तस्माच्छारीरकं ज्ञानं संक्षेपात्कथ्यतेधुना ॥४८६॥
कर्मणा प्रेरितो जीवः शुक्रशोणितबंधयोः
गर्भकाले ऋतौ प्राप्ते नाभिमध्ये स्थितिर्भवेत् ॥४८७॥
प्रथमे मासि पेशी स्याच्छिरोमांसद्वये तथा
पाणिपादौ तृतीये च कट्युदराणि तुर्यके ॥४८८॥
पंचमे मासि चैतन्यं षष्ठे कर्णाक्षिनासिका
सप्तमे नखरोमादि ऊर्ध्वादधस्तथाष्टमे ॥४८९॥
नवमे प्रसूते गर्भश्च योनियंत्रनिपीडितः
शुक्राधिक्याद्भवेत्पुत्रो रक्ताधिक्याच्च कन्यका ॥४९०॥

द्वयोः साम्ये भवेत्क्लीबो सर्वकामादिवर्जितः
परस्परं निघाताच्च युग्मगर्भश्च जायते ॥४९१॥
देहे सप्तशतं नाड्यो संत्रिषष्टीशतत्रयं
सप्तोत्तरं मर्मशतं षट्चक्रं पंचवायुना ॥४९२॥
कलाः सप्ताशयाः सप्त धातवः सप्त तन्मलाः
सप्तोपधातवः सप्त त्वचा सप्त प्रकीर्तिताः ॥४९३॥
नवद्वाराणि पुरुषे तेषां दश तु योषितां
वातपित्तकफाश्चेति त्रयो दोषाः प्रकीर्तिताः ॥४९४॥
पंचभूतं पंचतत्त्वं पंचेंद्रियं शरीरिणां
सार्धत्रयं कोटिरोमाणि शरीरं जायते नृणां ॥४९५॥
लक्षोनाः कोटि संख्याता मुखादूर्ध्वं प्रकीर्तिताः
आधाराः षोडश प्रोक्ता नाभिर्देहस्य मध्यमं ॥४९६॥
जीवस्थानं च नाभिस्थं ब्रह्मरंध्रं मुखासनं
इडा पिंगला सुषुम्णा चंद्रसूर्यश्च ब्रह्मणा ॥४९७॥
एकविंशसहस्राणि षट्शतानि तथाधिकं
निशाहं चरति प्राणः सोहमित्यक्षरद्वयं ॥४९८॥
लिंगे रंध्रद्वयं प्रोक्तं मूत्रं शुक्रं पृथक् पृथक्
तद्वद् रंध्रद्वयं स्त्रीणां मूत्रं गर्भः पृथक् पृथक् ॥४९९॥
उदरे पंच कोष्ठानि स्त्रीणां गर्भस्तु षष्ठमः
मूत्रमाढकमानं तु विष्ठां चैव तथाढकं ॥५००॥
दिक्संख्या चांगुलं लिंगं योनिश्चांगुलतुर्यका
द्वौद्वौ पलौ तथांडे च गुदा स्यादंगुलत्रयं ॥५०१॥
षडंगुलं तु चरणं कटिस्त्वष्टांगुला स्मृता
द्वादशांगुलमानश्च अर्धहस्तश्च जायते ॥५०२॥
त्र्यंगुलप्रमितं घ्राणं जिव्हा सप्तांगुला स्मृता
ग्रीवा चांगुलचत्वारि घ्राणात् द्वादश तालकं ॥५०३॥

पलप्रमाणं नेत्रं तु सपादप्रस्थशोणितं
कुडवार्धं भवेच्छुक्रं विषं तु पलसप्तकं ॥५०४॥
त्रीणि चैवाग्निस्थानानि सर्वदेहे स्मृतानि च
तेनाग्निः पच्यते सर्वं कथं गर्भो न पच्यते ॥५०५॥
अर्धयोनेरधोनाभ्याः कुक्षिर्बस्तिस्तथांतरे
वायुना रुध्यते येन तस्माद् गर्भो न पच्यते ॥५०६॥
नरादष्टगुणः कामो नारीणां च प्रजापते
रजः प्रवर्तते तस्मान्मासि मासि च शुद्ध्यति॥५०७॥
नाभ्या अधो वामभागे दवर्क(?)द्वयमुच्यते
एकस्मिंश्च भवेन्मूत्रं द्वितीये पुरीषं स्मृतं ॥५०८॥
पुरुषाणां कामदोप्तौ शिराद्वयं हि चांडयोः
घ्राणमूलादत ऊर्ध्वं कपालं सप्त चांगुलं ॥५०९॥
देहमूलं यथा नाभिर्जिन्हा तु जपमूलकं
कर्णौ श्रवणमूलं तु मोक्षमूलं तथा गुरुः ॥५१०॥
विलोक्यानेकशास्त्राणि चिकित्सानि गुरोर्मुखात्
यदत्र वर्णनं किंचित् मया प्रोक्तं यथामति ॥५११॥
संवदष्टादशे चाब्दे अंकाग्निवर्षसंयुते
मासे भाद्रे कृष्णपक्षे पंचम्यां गुरुवासरे ॥५१२॥
कूर्मदेशेर्जुनपुरे तत्रावासः कृतो यतः
गुरुर्जीवाभिधनश्च गच्छे चागमसंज्ञिते ॥५१३॥
तस्य पीतांबरः शिष्यस्तत्पादांबुजकिंकरः
देवीगुरुप्रसादेन विश्रामो ग्रन्थकारकः ॥५१४॥

श्लो ५०८ दवर्कद्वयं कोइली इति लिखितं तत्र । ५१२ अंकाग्नि अंक ९ अग्नि ३ प्रतिलोमेन ३९ संवत १८३९ इति । ५१२ कूर्मदेशे कच्छदेशे । अर्जुन पुरे अंजार नगरे ।

॥ इति श्री व्याधिनिग्रहो ग्रन्थः संपूर्णः

॥ प्रशस्तापथसंग्रहः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्री महाकालेश्वराय नमः ॥

॥ अथ प्रशस्तौपधसंग्रहं व्याख्यास्यामः ॥

श्रीनाथं शिरसा नत्वा ज्वराद्यामयशांतये ॥
भेषजानि प्रशस्तानि संगृह्यंते समासतः ॥१॥

॥ अथ सर्व ज्वरेषु ॥

मुस्तापर्पटधन्वयासधनिकाभूनिंबविश्वामृता
मृद्वीकादशमूलनिंबसहदेव्यारग्वधव्याधयः ॥
सेव्यांभःसुनिषण्णचंदनबलापाठावरीसारिवा
खर्जूरत्रिफलामधूयवनिका अश्वत्थजं वल्कलं ॥१॥
रास्नानिर्जरदारुचव्यचपलामूलानि सर्वोत्पलं
मंजिष्ठाकणवेणुपत्रकटुकाभार्ङ्गीपटोलानि च ॥
स्तन्यक्षोणिभुजंगपुष्पलविकारुद्राक्षगोरोचनं
वासाकेरजलाजवत्सकसिता सर्वं निहंति ज्वरान् ॥२॥

॥ अथ शीतज्वरे ॥

पाठादार्विमहाबलात्रिकटुकाजाजीरसोनस्तथा
विष्णुक्रांतसिनानिकागृहभवो धूमस्तुलस्योद्भवं ॥
नारंगस्य शलाटुपत्रमरलुत्वक्पत्रनिर्गुंडिका
भार्ङ्गीपक्व टच्छदाश्च सकलं शीतज्वरं हंत्यदः ॥३॥

॥ अथ रक्तपित्ते ॥

वासापर्पटसेव्यचंदनपरःकेरप्रसूनांबुदा
द्राक्षायष्टिमधूकमेघनिनदाः श्रेष्ठा च खर्जूरकः ॥
दुर्वादाडिमशुष्कगोमयवरीक्षीराज्यमत्स्येक्षणा
क्षौद्रं मोचरसो वटांकुरसिता घ्नंत्यस्रपित्तामयं ॥४॥

॥ अथ प्रदरे ॥

जंबूक्षीरतरुत्वगंबुदवरीलाक्षाजपाचंदनं

रंभाकरंजपुष्पधात्रिखदिराः किंजल्कमंभोरुहं ॥
इक्षुश्चापि पटुर्विषाकुवलयं कूष्मांडकालिंगकं
पत्रं च प्रदरं निहंति सुदृशामुद्रिक्तमप्यंजसा ॥५॥

॥ अथ प्रदराचांतरभेदे सोमरोगापरपर्याये अस्थिस्रावे ॥

वाराहीप्रियवृक्षमोदकतरोःपुष्पं मधूकोद्भवं
पाठालोध्रसरोज त्रकदलीकंदश्चदंष्ट्रांबुदाः
जंब्वाम्रास्थिशतावरीसरसिजं किंजल्कमप्युत्पलं ॥
धात्रीयष्ट्यमृताजतूनि च जयंत्यस्थिस्रुतिं योषितां ॥६॥

॥ अथ कासश्वासहिक्कासु ॥

भार्ङ्गीकर्कटशृंगिकात्रिकटुकामांसीहरिद्रावचा
चव्यं ग्रंथिकदीप्यकाग्निलशुनाजाजीद्वयारग्वधाः ॥
निर्गुंडीदशमूलसर्षपवरारास्नाचतुर्जातकं
देवाव्हं च मनःशिलाकरिकणाज्योतिष्मतीसैंधवं ॥७॥
तालीसागुरुहिंगुमूलकटुकाक्षारीकपोताञ्झटा
वृश्चीवामयमातुलुंगकयवक्षाराश्च जातीफलं ॥
भृंगालर्ककुरंटकाः कसनजिद्वासाहरिन्मंजरी
कार्पासीदलमेदिनीकुरुबकः स्फूर्जातकाः किंशुकः ॥८॥
तद्वत्कुंडलिवृश्चिकालिखदिराभूताकुलित्थः पुरः
शाकोटासनसोमवल्कसुरसाप्यंकोलबीजानि च ॥
द्राक्षाक्षीरसिता हरंति कसनं श्वासं च हिध्मां जलं
कापित्थं बदरास्थिपिच्छभसितं हिध्मां शठी चोधरेत्॥९॥

॥ अथ क्षये ॥

जीवंतीघृतधन्वयासममृताजाक्षीरखर्जूरको
द्राक्षानागबलाष्टवर्गनवनीतान्यश्वगंधा वचा ॥
कूष्मांडं च मधूलिकाकसनजित्श्वासं महोरःक्षतं
पूर्वं भेषजसंचयः क्षयमपि व्यक्तं नयंति क्षयं ॥१०॥

॥ अथ तृष्णास्वरभेदश्वासकासादौ ॥

भार्ङ्गीग्रंथिककाकमाचिचविकारास्नाटरूषागरु
द्राक्षामासिकभृंगराजबृहतीद्वंद्वाग्निकैर्यकं ॥
एलापत्रकविश्वभेषजकणानागाह्वयंगत्वच-
स्तृष्णाघ्नं स्वरसादयुक्तकसनं श्वासादिकं नाशयेत् ॥११॥

॥ अथारोचके ॥

व्योषं त्रिजातकसितापिचुमंदपुष्पं
सिंधूत्थजीरकयवाग्रकमातुलुंगं ॥
तालीसचव्यकणमूलहलस्थलको
निघ्नंत्यरोचकमपि प्रबलं क्षणेन ॥१२॥

॥ अथ छर्दौ ॥

मुद्गछ्लोष्ठहिमदाडिममातुलुंग
जंब्वाम्रपल्लवसितामधुविल्वलाजाः ॥
कोलास्थिकैरजलसक्तुकपित्थशुंठी
तालीसजीरकपयोघनिकाविमिश्राः ॥१३॥

॥ अथ मूर्छायां ॥

द्राक्षाखर्जूररंभाफलहिममधुकं सान्यकोलास्थिगोपी
कूष्मांडक्षीरकेरीसलिलकुतपसितामस्तुनेत्रसुलाम्बाः ॥
दुःस्पर्शैलेयकृष्णाविसजलबदरादाडिमांभोमधूकं
जीवंतीसैन्धवनागाह्वयमपि च मदं हंति मूर्छामयं च ॥१४॥

॥ अथ तृषि ॥

यष्टीसैन्धवधान्यकचंदनवरीमुस्तापटोलामृता
धात्रीपर्पटमुद्गयूषधनिकाकाश्मर्यभूनिंबकैः ॥
द्राक्षालाजसितेक्षुदाडिमपयःखर्जूरकेरीजलै
र्गोधूमाजयवचूर्णसक्तुसलिलक्षौद्रैश्च तृट् शाम्यति ॥१५॥

॥ अथ संन्यासे ॥

कटफलांजननस्यांजनधूमा दहनं च नखतोदः ॥

दशनमलिमुख्यैरपि लशुनपटुव्योषमातुलुंगं च ॥१६॥
कपिकच्छ्वा घर्षणमपि संन्यासं घ्नंत्यमूनि सर्वाणि ॥

॥ अथार्शसि ॥

वर्षाभूवज्रवल्लीमथितशिखिवरासूरणद्रद्रमौर्वी
व्योषं कैडर्यभल्लातककरजकपित्थाम्लिकाहस्तकर्णी॥१७॥
मुंडिन्यूल्लकदंतीलशुनगुडयवक्षारमूत्रं द्विकुंभं
निघ्नंत्यर्शांसि रक्तस्रुतिदहनत्रिभिक्षारकर्माणि चैव ।१८।

॥ अथ रक्तार्शसि ॥

लेप्यार्शसां हरितमंजरिकाविशल्या
जीमूतनादपटुकंकणगेहधूमाः ॥
रक्तार्शसां कुटजतार्क्ष्यपलांडुपत्रं
किंजल्कगव्यनवनीतमुपोदिकाः स्युः ॥१९॥

॥ अथोदावर्ते ॥

श्यामात्रिवृत्तिल्वरसोनदंतीस्नुक्शंखिनीहिंगुशिवागवाक्ष्यः ॥
एरंडकंकुष्ठकुलित्थयूपमूत्राण्युदावर्त्तरुजं निहंति ॥२०॥

॥ अथातिसारे ॥

पाठावत्सकधन्वयासककणामाद्रीसमंगाझटा
शुंठीमाचरसोजमोदविजयाजातीफलांभोमुची ॥
चूतास्थीक्षुरबीजखादिरपयःसर्ज्जोत्रालं तथा
रंभाधातकिनारिकेरकुसुमं चिंचांघ्रिबीजाजिनं ॥२१॥
पूलासद्वयजं प्रमेहरिपुजं बर्बूरबोरद्रुमो-
द्भूतं पल्लवमाम्रनीपतरुजक्षीरद्रुजंबूत्वचौ ॥
बालं तिंदुकबिल्वदाडिमफलं लोध्रोरलुर्यक्षधृक्
दध्याजं मधुलाजतैलमुखितान्येतान्यतीसारिणां ॥२२॥

॥ अथ ग्रहण्यां ॥

पूतीकद्वयबाणपुंखिमथितं क्षुद्रोधिनीबर्बरा
शार्ङ्गेष्टातलपोठपप्पणवचाक्षारत्रयं जीरके ॥

वष भूद्वयपंचकोलमरिचान्यंकोल्ककैडर्यकं

चांगेरीधवहिंगुपंचलवणं घ्नंति ग्रहण्यामयं ॥२३॥

॥ अथ मंदवन्हौ ॥

यान्यतिसारहराणि प्रोक्तानि घ्नंति तान्यपि ग्रहणीं ॥

ग्रहणीहराणि यानि तानि च जनयंति जाठरं वन्हिं॥२४॥

॥ अथ विशूचिकायां ॥

पूर्वं छर्दनमंभसा सपटुना नस्यं रसैर्भृंगजै-

र्निष्पाव च्छदविश्वशुद्धकटुकं दाहश्च पाण्योस्तथा ॥

भ्रष्टो जीरकटंकणश्च पयसा पानं तथा भेषजं ॥

वर्चो वर्बरमंजनं च कटुकद्रव्यैर्विपूच्यां हितं ॥२५॥

॥ अथ प्रमेहेषु ॥

आकुल्यब्धकमंबुधात्रियुफलं कार्पासवीजामृता

पाठाविंवजमूलशिग्रुकतकं श्रेष्ठा च गुंजा सिता ॥

निर्यासः खदिरारिमेदयुगयोर्वीरद्रुनिंवासने

ब्राह्मीकोकिलदक्कुकपित्थककुभं क्षीरद्रुजंवूत्वचौ ॥२६

कांतं ह्यभ्रककिट्टगुग्गुलुशिलाजित्वाज्यमत्स्येक्षणा

भंजीकेसरकैरवेक्षुरभवं वीजं च कडर्यकं ॥

पुष्पाश्वत्थककैरपुष्पमुशलीवेणुछदाः किंशुक-

स्तैलं माक्षिकमुद्गयूषमथितं घ्नंति प्रमेहं द्रुतं ॥२७॥

॥ अथ मूत्रकृच्छ्रे ॥

यष्टीगोक्षुरयुग्मकाशकतकं द्राक्षागुडूचीवरी

कूष्मांडेक्षुकपोतकंकक्षरसीदार्वीत्रुटिश्चंदनं ॥

मत्स्याक्षीकुशतंदुलीयत्रपुकब्राह्मीक्षुरोर्वारुकं

धात्रीमुद्गसिताब्जकेरसलिलं स्यान्मूत्रकृच्छ्रापहं ॥२८॥

॥ अथ प्रमेहपिटिकासु ॥

एलातुरुष्कगदपत्रकरात्रिसेव्य

स्थौणेयशुक्तिनखगुग्गुलदेवधूपाः ॥

श्रीवासचोलतगरागरुदेवदारु
क्षीरद्रुमाश्च पिटिका विनिहंति सद्यः ॥२९॥

॥ अथाश्मर्यां ॥

गुंद्रागुच्छकुलित्थटंकणयवक्षारोश्मभिद्भाल्लुकं
पद्मं प्रस्तरभित्प्रसारिणित्रुटीनिर्यासपूत्यद्धकं ॥
मूलं मोरटशिग्रुपूगवरुणैरंडं त्रिवृद्वृश्चिका
कृच्छघ्नानि च भेषजानि सहसा घ्नंत्यश्मरीं शर्करां ;३०

॥ अथ सोमरोगे ॥

निघ्नंति माषमुशलीहिमतालकंदं
धात्रीवरीकतकगोक्षुरशर्करैलाः ॥
द्राक्षागुडूचिकदलीफलकं च पद्मं
किंजल्कसेव्यमधुकानि च सोमरोगं ॥३१॥

॥ अथ विद्रधौ ॥

त्रायंतीत्रिफलाकरंजयुगलं शिग्रुद्वयं मोरटा
वर्षाभूवरणाजशृंगिबृहतीद्वंद्वाश्वगंधाशिवा ॥
सैंधवंद्वपटोलगुग्गुलुशिलाजिच्चाग्निनिवद्वयं
बाह्याभ्यंतरविद्रधीं प्रशमयत्यन्हाय लेपादिभिः ॥३२॥

॥ अथ स्तनविद्रधौ ॥

स्तनविद्रधेस्तु तिलयष्टिकन्यकाकुरुवकपिचुमंदरात्रिभिः ॥
वहुपाचलछदसदाफलत्वकसारिवाकुलिंदलैश्च लेपनं ॥३३॥

॥ अथ अंडवृद्धौ ॥

हिंगुपटुलशुनपप्पणयक्षाक्ष्यैरंडतैलमुंडिन्यः ॥
मोरटशक्रलतासृग्वर्षाभूचित्रकाश्च वृद्धिघ्नाः ॥३४॥
निर्गुंडीदशमूलबर्बरपत्रिक्षीरं हरिन्मंजरी
त्रिक्षारं द्विकरंजपंचलवणं कुंभद्वयं जीरके ॥
श्रेष्ठाहिंगुकुलित्थयूषहपुषाकेरीपयश्चिभिंटं
कैडर्यीषणगेहधूमलशुनान्यम्लं तथा वेतसं ॥३५॥

[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥६॥
[illegible]
[illegible] ॥

॥ अथ [illegible] ॥

[illegible] ॥
[illegible] ७

॥ अथ [illegible] ॥

[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥८॥

॥ अथ [illegible] ॥

[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥९॥

॥ अथ [illegible] ॥

[illegible] ॥
[illegible] ॥१०॥

॥ अथ [illegible] ॥

[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥११॥

॥ अथ शोथे ॥

वर्षाभूदशमूलदारुलशुनं ब्राह्मीगवाक्षीशिवा
रास्नाशुक्तिपुनर्नवाद्वययवक्षारत्रिवृन्मोरटा ॥
दंतीमुस्तुरपंचकोलरजनीकंकुष्ठलोहक्षुरं
गोमूत्राजपुरीषमूत्रमथितं शोथं हरत्यंजसा ॥४२॥

॥ अथ विसर्पे ॥

कल्हारोत्पलकंदकेरकुसुमं कूष्मांडमंभोमृता ॥
गोलोमीशुकनाशिकाहिमवरीक्षीरद्रुशृंगांबुदाः ॥
रक्तोग्रामपि निंबसेव्यतुलसीसर्पिस्तिलं सारिवा
दूर्वायष्टिमधूकबोधिमुनयो वैसर्पदर्पापहाः ॥४३॥

॥ अथ मसूरिकायां ॥

वासावरीनिंबपटोलधात्रीब्राह्मीकुनिंबोजविभूतिदूर्वाः ॥
भोधन्युपानद्रुमसारसेव्यत्रायंतिमुस्ताश्च मसूरिकाघ्नाः ॥४४॥

॥ अथ शीतपित्ते ॥

भूतिः समरिचचूर्णं सर्षपसहितं गुडूचिकाचित्रं ॥
सैंधवचंदनसर्पिः सेव्यानि घ्नंति शीतपित्तार्तिं ॥४५॥

॥ अथ कुष्टे ॥

वर्षाभूपिचुमंदचंदनवरीशंपाकसेव्यानल-
त्रायंतीसुरमूलिकासनवराजोतिष्मतीमार्कवाः ॥
जीमूतार्कपटोलगंधकशिलातालस्नुहामोरटा
दार्वीवायसजंघिका ग्रहभवो धूमो विशाला निशा॥४६॥
आवर्त्तन्युभयं शिरीषखदिरौ वन्यः शिरीषद्रुमो
कासघ्नो घनकारवेल्लकरजो जंतुघ्नमंजिष्ठकौ ॥
बीजांकोलकसोमराजित्रिपुटाभल्लातकोग्रामया
मूत्राण्यष्टककाकमाचिकटुकानि घ्नंति कुष्टान्यलं ॥४७॥

॥ अथ श्वित्रकुष्टे ॥

नीलीवरालशुनबाकुचिलोहचूर्णं

शंपाकनिंवमधुपासनशंखपुष्पी ॥
द्वीपिद्विपार्जुनमरुष्करनित्यमौनी
श्वित्रं हरंत्यपि च कुष्ठहरौषधानि ॥४८॥

॥ अथ कृमिषु ॥

ब्रह्मक्ष्मारुहवीजवेल्लझरसीपथ्यावचायक्षधृक्
निर्गुंडीघनचंदनं कृमिरिपुः कुद्दालकः कीचकः ॥
हिंग्वग्निः कणकारवेल्ललशुनं क्षाराखुकर्णीशिफा
वेत्रीयं कृमिहंत्ररुष्करमजास्पृक्कोपनाहं तथा ॥४९॥

॥ अथ सामान्यतो वातविकृतौ ॥

रास्नासुराह्वदशमूलकरंजयुग्मं
कुष्टाष्टवगलवणानि वला शताह्वा ॥
एरंडमोरटकुरंदकुलित्थमाष
गंधालिकोलतगरागरुरात्रिवोलाः ॥५०॥
निर्गुंडिकाहरितमंजरिचित्रतैलंहिंगुप्रसारिणिपुनर्नवगेहधुमाः [५१
तर्कारिगुग्गुलुसुधाह्वयपीलुतैलं कार्पासवीजसरलाश्च हरंति वातं

॥ अथ सामान्यतः पित्तविकारे ॥

मत्स्याक्षीतृणपंचमूलफलिनीभूशर्कराशर्करा
द्राक्षावालुकसेव्यगोपवनिताखर्जूरवासामृताः ॥
भद्रश्रीघनसारनिंवमधुकं न्यग्रोध वोधिद्रुमौ
प्लक्षोदुंवरजंवुतिंदुकवरीधात्रीविदारीघनः ॥५२॥
जीवंतीघननाददाडिमफलं क्षीरं च केरीपयो
दूर्वाविंवपटोलमुद्गगजजपापुष्पं मधूकोद्भवं ॥
कन्याहल्लकपद्मकंदतरुणीशलेयरंभाफलं
पुष्पोर्वारुफलं च शिग्रुकुसुमं पित्तं निहंति ध्रुवं ॥५३॥

॥ अथ सामान्यतः श्लेष्मविकारे ॥

प्रोक्तानि यानि पूर्वं कासश्वासक्षयापहारीणि ॥
तान्येव भेषजानि श्लेष्माणं नाशयंति सर्वाणि ॥५४॥

॥ अथ वातरक्ते ॥

रास्नामोरटयामिनीनकुलिकादेवाह्वयष्टीबला
चालं क्ष्मादलमूलतैलजतिलाः क्षुद्रा च कंपिल्लकः ॥
धान्याम्लेक्षुरकेतकीरसमिसिक्ष्मापीलुपंचांगुलो
वेणुश्चात्तगलोमृतागरु गदं वातास्रकं नाशयेत् ॥५५॥

॥ अथावरणे ॥

जीवंत्यमृतातुरगाफलं कणा च द्विपंचमूलानि ॥
ऐलेयकलशुनबलामधुकानि च नियतमावृतिघ्नानि॥५६॥

॥ अथ मेदोवृद्धौ ॥

विडंगकालायसचूर्णतैलं कुलित्थगुग्गुलवसनानलं च ॥
शिलाह्वपथ्यायवयावशूकक्षौद्रानि च स्थौल्यनिवर्हणानि॥५७॥

॥ अथ कार्श्ये ॥

विदारिकूष्मांडतुरंगगधा क्षीरं घृतं मांसरसः पयस्या ॥
वरीकुमारीदधिमाहिषं च कार्श्यस्य कार्श्यं रचयंति सद्यः॥५८॥

॥ अथ वंध्यात्वदोषे ॥

शाङ्गेष्टाह्वयगंधिकाधनदहकूलक्षीवरीपंडकी
मूलं धात्रिपुनर्नवस्य च तथा श्वेतश्च पूलासकः ॥
वोधिक्षीरिणिदाडिमीवटपयावंदाकमौदंवरं
वंध्यास्त्र्यत्तुदिनेथवा दशदिनं पीत्वा प्रसूते सुतं ॥५९॥

॥ अथ गर्भिण्यां ॥

नवनीतदुग्धसर्पिर्जांगलपिशितानि जीवनीयानि ॥
अन्यानि चैव मधुरद्रव्याणि सुखं दिशंति गर्भिण्याः ॥६०॥

॥ अथ सुखप्रसूत्यर्थे ॥

योनेर्लेपनधूपनं गदफणित्वग्लांगलीसर्षपै
र्वंण्याः स्पर्शनमाशुतालुगलयोर्मूर्ध्नी हितं स्नुक् पयः ॥
तालीसागरुकल्कपानमधुरामंडीनहालावुका
पाण्यादौ च सुवर्चलापरिधृता कूर्यात्प्रसूतेः सुखं ॥६१॥

॥ अथ वालग्रहेषु ॥

शमनानियानियेषांभेषजसहितानितानितीक्ष्णानि ॥
तेषुगदेषुशिशूनांमुपयुञ्ज्यान्मात्रयो कनीयस्या ॥६२॥

॥ अथ शिशूनां धूपने स्नाने च ॥

सर्पत्वक्घृतकुष्टसर्षपवचागोश्रृगकं चौतुविट्
कार्पासास्थिसुरद्रुभूजरजनीनिंवच्छदैर्धूपनं ॥
स्नानं जंबुकपित्थकिंशुकवलाक्षीरद्रुशुद्धांबुना
तत्सन्मानवलिश्चतुष्पथकृतो वालग्रहं नाशयेत् ॥६३॥

॥ अथ भूतग्रहे ॥

धूमो हिंगुरसोनकेशबृहतोनिंवच्छदाज्यं क्षपा
सिद्धार्थद्विपद तु गुग्गुलुवचानिर्माल्यवर्हिच्छदैः ॥
पानं भूमिकदंबहंसपदिकाभूतांकुशत्वक्छदै
स्तद्वद्वांछितवस्तुभिश्च वलयो भूतान्नयेयुः शमं ॥६४॥

॥ अथोन्मादे ॥

द्राक्षांभस्तनलोहितांडमधुकं स्तन्येक्षुगोरोचनं
शार्दूलामिषपुष्पचंदनवरीब्राह्मीपयोदावरा ॥
तीक्ष्णं नावनमंजनं प्रहरणं संत्रासनं तर्जनं
किंचित्स्वोपनहर्षणं च शमयेदुन्मादमत्युल्वणं ॥६५॥

॥ अथापस्मारे ॥

गोजाष्ट्राश्वशृगालनागनकुलामार्जारगोधाभवैः
पित्तैस्तु त्रिफलाकरंजलशुनव्योषैश्च नस्य मुहुः ॥
पानं पंचकशंम्यशंखकुसुमब्राह्मीवरीसारिवा
कुष्मांडैर्विनिहंत्यपस्मृतिरुजं धूपश्च निंवच्छदैः ॥६६॥

॥ अथ नेत्ररोगेषु ॥

सौवीरांजनशंखतुत्थयुगलं सिंधूत्थपुष्पांजनं
स्रोतोजस्फटिकेंदुचंदनकणापाथोधिफेनक्षपाः ॥
दार्वीगैरिकगंधतालकशिलासूताहिकासीसकं

जातीकेशरसांजनं च मधुकं चंद्रा च चिंचाफलं॥६७॥
रत्नानां नवकं गवादिदशनं शृंगादि तेषां तथा
हेमाक्ष्यादिकधातवः श्रुतिमलो बोधिद्रुपत्रं फलं ॥
श्वेतक्ष्माधरपर्णहंसपदिकासुश्वेतपूलासको
मूलं श्वेतपुनर्नवस्य कतकं लोध्रं शिला कुंकुमं ॥६८॥
धात्रीपीतकरोहिणीगदफलीकंसं करंजाफलं
जीवंती शफरेक्षणा लवनिका मेषारवं गृंजनं ॥
लक्ष्मीवन्यकुलत्थवाजिपृथुकामूलं वरा द्विस्थिरा
पुष्पं तीक्ष्णशिरःकपालत्रिजयाविश्वौषधं टंकणं ॥६९॥
नंद्यावर्तकतालवृंतलकुचोवृक्षाम्लपुष्पद्रुमो
नारीक्षीरतटाकशुक्तिसलिलं ब्रह्मद्रुदुग्धान्यपि ॥
क्षौद्राज्यं नवनीतमप्यपहरंत्यक्ष्णेरशेषान्गदान्
गंडूषांजननस्यतृप्तिपुटपाकाश्चोतनैर्लेपनैः ॥७०॥

॥ अथ कर्णरोगेषु ॥

पत्राणि शिग्रुतुलसीरविशिंधुवार
घोटाविभूतिरथ वर्बरमूलकानां ॥
मौर्वीवराटलिकुचाब्दवचाशताव्हा
सिंधूत्थगुग्गुलुपलांडुसुधारसोनाः ॥७१॥

कार्पासबालजलसर्षपतैलमेवमावर्तनीफलसुराह्वनिशार्द्रकाणि ॥
व्योषाजमूत्रनृपवृक्षफलं त्रिशूल्या तालस्य नालमथ
चामरिकाजगंधे ॥७२॥

॥ अथ कर्णव्रणे ॥

तालीसाग्निनिशांतधूमकयवक्षाराब्धिविश्वौषधं
पथ्याचासनलोध्रसैंधवकणागोमूत्रमत्यक्त्रुटी
दार्वीग्रंथिकदारुताक्ष्यंचविकातेजावतीवत्सको
,ह्रीबेरामयमाक्षिकानि च दृढं निघ्नंति कर्णामयं ॥७३॥

॥ अथ नासारोगे ॥

तालीसोपणवन्हिनागरकणामंडूकपर्णी निशा
निर्गुंडीतुलसीकुकुभवविकापामार्गवर्कारिभिः ॥
भृंगागस्त्यनृराव्हमूलकपुराजाजीद्वयं ग्रंथिकं
श्रेष्ठावेल्लकरंजवीजलशुनं निघ्नंति नासामयं ॥७४॥

॥ अथोष्टरोगे ॥

सर्जरसस्तिलतैलं त्रिफला क्षौद्रं क्षपा मधूच्छिष्टं ॥
निंवझटा रौप्यटंकू निर्गुंडीयष्टिरोष्टरोगहरं ॥७५॥

॥ अथ गंडमालायां ॥

गंडमालाजितमपक्वांशो विधूपचर्यतां विदध्याच्च ? ॥
पूयानद्वैवविपक्वा विपाव्य शनकैः प्रसादयेत्वनवत् ?॥७६॥

॥ अथ दंतरोगेषु ॥

रास्ना पुंसि वलारिमेदककुभत्वग्भानुकेरीपयो-
वर्षाभूतलपोटनिंवबकुलीवीजं हरिन्मंजरी ॥
सिंधूत्थाढकपत्रविश्वखदिरास्तैलं च कर्पूरजं
तैलं दीप्यकमुद्गिरंति रदजांस्तन्मूलजांश्चामयान् ॥७७॥

॥ अथ रसनातालुरोगेषु ॥

दार्व्योव्योपशिलाकुनिंवतुलसीसिंधूत्थपथ्यानिशा
निर्गुंडी खदिरारिमेदयुगलक्षीरद्रुमत्वग्गदाः ॥
वासापिप्पलिमूलपाक्षिकघृतं क्षारोपकुंचीवचा
विष्णुक्रांतपटोलकाश्च रसना तात्वामयच्छेदनाः ॥७८॥

॥ अथ मुखरोगे ॥

जातीपत्रवरारिमेदमधुकं क्षीरद्रुनिंबाभया
दार्व्योव्योपवरांगजीरकचतुर्जाताब्जकंकोलकं ॥
जंबूखादिरसारपार्थतुलसीगोमूत्रजातीफलं
क्षौद्रक्षारशशांकराजतरवः सर्वास्यरोगापहाः ॥७९॥

॥ अथ शिरोरोगेषु ॥

यष्टी शिलातगरुकुंकुमकुष्टगोपी
सेव्यत्रिजातघनचंदनकेसराणि ॥
सिंधूत्थवालुकवरा मृगनाभिकन्या
मंजिष्टका त्रिकटुभृंगबलाशताव्हाः ॥८०॥
वेल्लामृता जलरुहागरु देवदारु
कर्पूरचोरकनिशाद्वितयोत्पलानि ॥
कल्हारजातितिलतैलपयोधराश्च
मूर्धामयान् प्रशमयंति कपालजांश्च ॥८१॥

॥ अथ व्रणे ॥

धान्याम्लोदककांस्यकं तिलघृतक्षीरद्रुयष्टीवरा
दूर्वागुग्गुलुवाय्वरीश्वरलतागोपांगना माक्षिकं ॥
मंजिष्टा रजनीकरंजवनमाल्यारामसीताम्लिका
जातीपल्लवतीक्ष्णतुत्थकटुका दार्वीमधुच्छिष्टकं ॥८२॥
युक्तं तंडुलखंडनं पवनजित्तैलेन युक्तं गुडं
चूर्णेनापि पुराणकेन हविषा सुश्लक्ष्णपिष्टं जले ॥
पत्रं पप्पण(?)बोधिनिंबसुवहाकार्पासकूपोदकं
चिंचांकोलविदारिजं व्रणहरं लेपोपनाहादिभिः ॥८३॥

॥ अथ सद्योव्रणे ॥

सद्योव्रणे यष्टिमधूकदुग्धं क्षौद्राज्यलाक्षांजनकाकतिक्ताः ॥
पथ्यापलांडुप्रियभूरुहत्वक् मयूरिका सर्जरसा हिताः स्युः ॥८४॥

॥ अथ अग्निदग्धव्रणे ॥

सिस्थकजपाज्ययष्टीदूर्वापत्तूरदुग्धकाकोल्यः ॥
केशहिमापामार्गसहदेव्यश्चाग्निजं व्रणं घ्नंति ॥८५॥

॥ अथ भग्नव्रणे ॥

घद्राक्तं घृतपट्टवंशबहुपादश्वत्थपार्थत्वच-

श्चिचास्थित्वगुदंवरोद्भवपया दक्षांडधात्री शिवाः ॥
तैलं भ्रष्टकुरंटकः समरिचं सर्जं च मृत्कर्पटं
पानं दुग्धयुगं च वोलजतुनोः शंसंति भंगे हितं ॥८६॥

॥ अथ भगंदरे ॥

वराविडालास्थि कणा पुरश्च न्यग्रोधवल्कच्छदनत्वगेला ॥
भुजंगवृश्चीकविडंगसारक्षाराग्निकर्माणि भगंदरेषु ॥८७॥

॥ अथ ग्रंथिषु ॥

ग्रंथिष्वर्कसदाफलं मधुरसं विस्फोटदग्धांगुलाः ॥
कासासासनशंखभस्मकरजोन्मत्तस्य वीजं हितं ॥
मेदोग्रंथिषु पादिकिंशुकगवा मूलं च वार्त्ताकिजं ॥
वर्षाभूकरवीरशिग्रुजमपि स्याल्लांगलीकंदकं ॥८८॥

॥ अथ श्लिपदे ॥

शाकोटवीजविजयौषधचित्रनिंव
तैलं त्रिवृद्विबुधदारुगुडूचिपानं ॥
सश्लीपदं स्नुमदसर्षप इंगुदीयं
वार्त्ताकशिग्रुरविमूलविलेपनं च ॥८९॥

॥ अथार्बुदे ॥

गोमूत्रपंचलवणानलशिग्रुमूलं
पार्थः करंजयुगभानुपुनर्नवोग्रा ॥
भल्लातकस्नुहिकटुत्रयगेहधूम
शंपाकलांगलिनिशासनमर्बुदघ्नं ॥९०॥

॥ अथोपचितव्रणे ॥

वीजं शिग्रुकरंजमूलकशमीजीमूतजं बाकुची
निर्गुंडीपटुनाकुलीसुरतरुस्नुग्भानुदुग्धान्यपि ॥
लांगल्युत्पलकन्यकासहचरा शुंठी विशालाम्लिका
वृश्चीवो महिषीगवोरपि खुरा निघ्नंति पूर्णं व्रणं ॥९१॥

॥ अथ नाडीव्रणे ॥

नाडीव्रणेषु तिलसैंधवरात्रियुग्मा-
पामार्गकच्छुफलपूतिकपत्रनिंबाः ॥
सौराष्ट्रिवज्ररविदुग्धनिशांतधूम
घोटाफलं रूचकयोजनवल्लिके च ॥९२॥

॥ अथ क्षुद्रामये ॥

अजगल्यालसिकच्छपिवृत्तसकपाषाणभेदमख्यातान् ॥
सुरतरुकुष्टशिलाह्वैर्लिंम्पेत्सूक्ष्मांस्तु साधयेद् व्रणवत् ॥९३॥

॥ अथ मुखदूषिकायां ॥

मुखदूषिकां वचावटदलधान्यककेरशुक्तिभिर्लिंपेत् ॥
आरग्वधपिचुमंदक्षौद्राज्ये पद्मकंदकं नश्येत् ॥९४॥

॥ अथोपदंशे ॥

आदारीदलतुत्थगैरिकवरामृत्कर्पटैलाशिला
यष्टीखादिरसारसैंधवतिलक्षौद्राज्यतालैरपि ॥
सौराष्ट्राढकिमृत्तथा च तिलजं शोथोपदंशापहं
त्वन्येषां व्रणवर्तिमेढ्रजनुषां कार्यो गदानां क्रमः ॥९५॥

॥ अथ योन्यामयेषु ॥

रास्नासैंधवपंचकोलमरिचाजाजीद्वयं रक्षको
गीर्वाणद्रुमहिंगुदीप्यकयवक्षाराब्दपाठाशिवाः ॥
उग्रागोक्षुरमातुलुंगकशिफातैलं च कारंजकं
तैलक्षिरघृतानि च प्रशमयंत्यन्हाय योन्यामयान् ॥९६॥

॥ अथ स्थावरविषे ॥

पाठाचंदनलोध्रकुष्टतगरक्षौद्राज्यकोशातकी
मूर्वाचव्यशिरीषचित्रकवचा वेल्लाब्दमेघारवा ॥
दार्वीगैरिकहेमतार्क्ष्यरजतं पथ्यापटोलामृता
सोमत्वग्द्विपुनर्नवं त्रिकटुकं नश्येद्विषं स्थावरं ॥९७॥

॥ अथ जंगमविषे तत्र सर्पविषे ॥

व्याघ्री भृंगिरिकर्णिका मधुरसा पाठा विशालेश्वरी
निर्गुंडी कटुतुंबिका च नकुली वृश्चिवनिलीशिफा ॥
बीजं वाकुचिपुत्रजीविवकुला जीमृतगुंजामृता
नक्ताव्हाश्च नृमूत्रमाक्षिकधृतं लाला मलः कर्णजः॥९८॥
कर्कोटी मुशली नमोगरुडकः सर्पिश्च निष्पावकः
कंदं व्योपवचारसोनरजनीमाधूकसारामयाः ॥
शृंगी टंकणकाकमाचिसुरसा धात्री हरिन्मंजरी
मेघध्वानकुरंटवज्रलतिकाजंतुघ्नसौराष्ट्रिकाः ॥९९॥
शेफालीनतमागधीघनरसो गीर्वाणतालीफलं
पंचांगं तु शिरीषजं ग्रहभवो धूमो महादुग्धिका ॥
चिंचापल्लवकारवेल्लदलजः सारः सितः कर्णिकः
पानालेपननस्यधूपनमुखैः सार्पं निहन्याद्विषं ॥१००॥

॥ अथ कीटकवीषे ॥

पीता हिंगुविडंगवन्यतुलसी मूलाग्धिनाद त्रिवृत्
पाठा व्योपशिरीषसैंधवयवक्षारामयाः सर्षपः ॥
मंजिष्टागजकेसरद्विरजनीपत्तूरमुस्तावचाः
क्षीरक्ष्मासहकल्कलेपनमिति घ्नंत्याशु कैटं विषं॥१०१॥

॥ अथ वृश्चिकविषे ॥

यक्षाक्षिकेसरपलाशकरंजयुग्म
स्नुग्भानुदुग्धसहितांगुनिशोष्ट्रदंताः ॥
तप्तारनालघृतसैंधवचित्रतैलं
पथ्याकटुत्रयशिरीषकपोतविष्टाः ॥१०२॥
आस्यांबु कर्णमलसिक्थकवत्सनाभि
पिण्याकसर्पमलगोमयमातुलुंगाः ॥
वृश्चीवनीलिहलिनीसुरसाद्रिकर्णी
निघ्नंति वृश्चिकविषं हि विलेपनेन ॥१०३॥

॥ अथ लूताविषे ॥

सर्पिर्माक्षिकशल्लगोमयरसापामार्गरात्रिद्वयं
वक्ष्यामाक्षिमनःशिलालतगरं क्षीरद्रुमत्वग्रुचौ ॥
पाठागैरिकयष्टिचंदनत्रुटीसिन्धूत्थगोपांगनाः
पानालेपनयोगतः प्रशमयंत्यन्हाय लूताविषं ॥१०४॥

॥ अथ मूषक विषे ॥

अर्कालर्ककपित्थसैंधवनिशाद्वंद्वामृतासैर्यकं
जीमूतामरनागदाडिममुनिभार्ङ्गीपयोदारत्राः ॥
मार्जारास्थि निशांतधूमकरजांकोलद्रुनिर्गुंडिका
गुंजेक्ष्वाकुपुनर्नवेंद्रलतिका घ्नंत्युंदरूणां विषं ॥१०५॥

॥ अथोन्मत्तविषे ॥

पादत्रघातरविदुग्धशिरीषपत्र
तांबूलकल्कनवचूर्णनिशांतधूमाः ॥
अंकोलबीजपृथुकाः शशदक्षवर्चो
धत्तूरकः स्फुटमलर्कविषं निहंति ॥१०६॥

॥ अथ सामान्यतो नखदंतविषे ॥

वटनिंबशमीवल्कलफलानि द्विनिशात्रिपादिगोजिन्हा ॥
पर्वतमृदिंदुवल्कं दंतनखोत्थं विषं हंति ॥१०७॥

॥ अथ व्यंगामये ॥

क्षौद्रं क्षीरतरुत्वगंकुरनिशाजाक्षीरलोध्रामया
मंजिष्ठाशररक्तपार्थफलिनीकोलास्थिदार्वीत्वचः ॥
शंबूः शाल्मलिजीरके घनमथो वाहश्च कृष्णास्तिला
वक्त्रांगं सगदं जयंति जनितं व्यंगं तथा लांछनं ॥१०८॥

॥ अथोत्कटे ॥

दहनं हितं प्रसूतौ मारुतकुष्टोदिता चिकित्सा च ॥
कोठे कुष्टचिकित्सा पित्तश्लेष्मक्रिया तथैवोक्ता ॥१०९॥

॥ अथ वाजीकरणे ॥

सूतं कांचनगंधकाभ्रककणा शुंठी विदारी घृतं
वर्षाभूमधुकाष्टवर्गमुशलीमाषाश्वगंधाशिफा ॥
शाकोटेक्षुरमर्कटी सुरलता वीजं च भंजीभवं
निर्यासः सलिलं च शाल्मलितरोर्जातीफलं भूसिता॥११०॥
शिग्रोः पुष्पफलच्छदाघनरवः श्वेताद्रिकर्णोदलं
मत्स्याक्षीछदनं तुरंगपृथुकालर्काः पयस्या वरी ॥
धात्री कर्कटशृंगिका सिततिलाः पद्मप्रहोरा वरी
जीवंतीदलगोक्षुरामृतलता मज्जमियालातुगाः ॥१११॥
केलीदुग्धजले सितेक्षुजरसं क्षीराज्यरंभाफलं
मृद्वीका नवनीतमाक्षिकमधूपुष्पं च खर्जूरकः ॥
गोधूमो यवषष्टिमज्जनयुतं सर्वाण्यमूनि ध्रुवं
रेतोवृद्धिकराणि संति हि नृणां तांबूलमद्ये तथा॥११२॥

॥ अथ रसायनानि ॥

हेमव्योमरसेंद्रगंधकविषायःकांतभल्लातकः
पथ्याक्षामलकानि गुग्गुलुशिलाजिच्चाग्निगोकंटकाः ॥
ब्रह्मक्ष्मारुहशृंगशंखकुसुमं मंडूकपर्णी वचा
ब्राह्मी नागवला विदारिमुशलीविश्वौषधं मुंडिनी॥११३॥
वाणाः कृष्णतिलाः पुनर्नवकणावेल्लामृतालांगली
लीलीवायसजंघिका कुरुवको ज्योतिष्मती किंशुकः ॥
कन्यावाकुचिकाक्रमाचिखदिरांकोलं तिलक्षीरिणी
पूलासाकुलिवृद्धदारुककुदं ह्यारग्वधोपानहः ॥११४॥
जीवंती नवमल्लिकासननिशानिंबाश्वगंधावरी
निर्गुंडी लशुनं महेंद्रलतिका मूर्वा स्थिरा श्रेयसी ॥
इत्येतानि रसायनानि ससितक्षौद्राज्यदुग्धान्यपि
प्रत्येकं च जरावलीपलितहृच्चायुः प्रकुर्याच्चिरं ॥११५॥

इत्येतानि च कल्कक्वाथसहाज्यतैललेह्यानि
पानान्वासनलेपाभ्यंजनवस्त्यादिभिः प्रयोज्यानि ॥१
अन्नमधुराम्ललवणस्निग्धोष्णानि अनिलेषु ॥
शीतकषायतिक्तमधुरतीक्ष्णानि पित्तेषु ॥
कफसंभवेषु तिक्तकटुकषायोष्णानि ॥
संसर्गजेषु मिश्रितं समृद्धेषु सकलमपि युंज्यात् ॥१
रोगेषु तेषु द्रव्याणि सम्यद्धितानि युंक्त्वा ॥
प्रयोजयति यः स भिषक्शब्दस्य पात्रं भवति ॥११९
इदं समस्तरोगाणां प्रशस्तौषधवारिधेः
अकार्षीद्बालबोधाय अवधानसरस्वती ॥१२०॥

॥ इति प्रषस्तौषधसंग्रहाख्यो ग्रंथः समाप्तिमगमत् ॥
विक्रमाब्द संवत् १९०७ मिते वर्षे मार्गशीर्ष
शुक्ल दशम्यां

॥ इति प्रशस्तौषधसंग्रहः समाप्तः ॥

——:o:——